A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 18 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 279, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

सबकी ख्वाहिश है कि
ख़ुद-मुख़्तार होना चाहिए
मैं समझती हूं कि ज़िम्मेदार होना चाहिए
ज़िंदगी जद्दोजहद के वास्ते थोड़े ही है
फ़ैसला इस पार या उस पार होना चाहिए
ख़ुद को हम इंसान कहते हैं
तो हममें लाज़मी
और कुछ बेशक न हो
क़िरदार होना चाहिए
दिल अगर हावी रहा होती रहेंगी ग़लतियां
आदमी को ज़हन से बे-दार होना चाहिए
ठोकरों पर ठोकरें मिलना मुक़द्दर है मेरा
ऐसा है तो फिर मुझे तैयार होना चाहिए।

– मनस्वी अपर्णा

प्रसंगवश

ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर हमले से इजराइल को मजबूती कैसे मिलेगी

खींवराज जांगिड़

मैं इजरायल से एक सप्ताह पहले ही आया। अक्टूबर 2023 में हमास के हमले के बाद से भूमध्यसागर (मेडिटेरेनियन) क्षेत्र में पुरानी गर्मी नहीं दिखी है। हमेशा जल्दबाज़ी में उलझे रहने वाले इजरायली कुछ शांत और चिंतित दिख रहे हैं। 2023 में बेंजामिन नेतन्याहू ने अपने 'न्यायिक सुधार' शुरू किए थे और इसके बाद से बीते हर सप्ताह की तरह पिछले सप्ताह की खबर सियासी खेल में अव्वल बने रहने की इजरायली प्रधानमंत्री की क्षमता के बारे में थी। और यह कि अधिकतर इजरायलियों के लिए ईरान मसला कोई अहमियत नहीं रखता।

ईरान पर इजरायल के भारी हमले के महज दो दिन पहले घरेलू खबर देश की धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष आबादियों में बढ़ती आंतरिक खाई की, यरुसलम और तेल अवीव में वार्षिक गौरव परेडों की, गाज़ा युद्ध को जारी रखने के लिए सैनिकों की कमी की थी, और यह भी कि धुर रूढ़िवादी यहूदी लोग अनिवार्य सैन्य सेवा देने से कब तक बच सकेंगे। इसके अलावा, युद्ध विरोधी आंदोलन के लोग यह बहस कर रहे थे कि इस सप्ताह नेतन्याहू के बेटे की शादी का जो आडंबरपूर्ण समारोह होने वाला है उसके स्थान पर विरोध प्रदर्शन किया जाए या नहीं।

धुर रूढ़िवादी यहूदियों के सेना में काम करने का मसला इतना गंभीर हो गया कि दो दिन पहले तक नेतन्याहू की सरकार का वजूद ही संकट में पड़ा था। वे सरकार को उस कानून के मसौदे को लेकर गिरा डालने की धमकी दे रहे थे जिसके तहत युवाओं को निर्देश दिया गया था कि वे सेना को सेवाएं देने के लिए आगे आएं, वरना कानूनी सज़ा झेलने के लिए तैयार रहें। बृहस्पतिवार की देर रात तक, इजरायली संसद 'नेसेट' को भंग करने के प्रस्ताव पर संसद में मतदान चल रहा था। धार्मिक गुटों को कुछ अधिक रियायतें देकर नेतन्याहू ने किसी तरह अपनी सरकार बचाई। उधर नेतन्याहू को तेल अवीव की एक अदालत में कठघरे में खड़े होकर अपने ऊपर घूसखोरी, जालसाजी, और धोखाधड़ी के मुकदमे में आरोपों का जवाब देना पड़ रहा था।

ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर शुक्रवार को किए गए हमले में तेहरान की कुछ रिहाइशी इमारतों को भी नुकसान पहुंचा। इसने इजरायलियों को भी आश्चर्य में डाल दिया। इस तरह की कार्रवाई किसी दीर्घकालिक रणनीतिक योजना का हिस्सा लगती है, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप भी शामिल लगते हैं। इन हमलों के बाद उन्होंने कहा कि उन्हें इनकी जानकारी थी और इसमें 'आश्चर्य वाली कोई बात नहीं है।' ट्रंप ने यह भी कहा कि उन्होंने ईरान को 60 दिन की मोहलत दी थी कि वह 'डील कर ले', इसलिए उसे यह कर लेना चाहिए था।

ईरान और अमेरिका की वार्ता गंभीरता से चल रही थी। परमाणु मसले पर वार्ता के पांच दौर पूरे हो चुके थे, छठा दौर रविवार को होने वाला था। ट्रंप कई बार कह चुके थे कि वे गज़ा पर हमले के बाद और मुयतें और विध्वंस नहीं चाहते, कि वे ईरान कूटनीतिक पहल करना चाहते हैं। वास्तव में उन्होंने दो सप्ताह पहले ही नेतन्याहू को हमला करने से हतोत्साहित किया था।

ट्रंप का मानना था कि ईरान पर परमाणु कार्यक्रम को नष्ट करने और उसके परमाणु ठिकानों की जांच के लिए रजामंदी देने की सख्ती करके वे उसे एक समझौता करने के लिए तैयार कर लेंगे। इस रणनीति से अब उनका दिमाग पलट क्यों गया या नेतन्याहू उस शख्स पर हावी कैसे हो गए जो यह कहता है कि वह किसी पर विश्वास नहीं करता, यह सब जानने में थोड़ा वक्त लगेगा। यह नेतन्याहू की निश्चित रणनीतिक जीत नजर आती है। आखिर वे ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षाओं के खिलाफ फौजी कार्रवाई पर 1990 के दशक से ज़ोर देते रहे हैं।

बहरहाल, यह इस क्षेत्र के लिए खतरनाक घटना है, क्योंकि कई देश इसकी चपेट में आ सकते हैं, हालांकि अमेरिका और फ्रांस तथा जर्मनी जैसे प्रमुख देशों ने अपनी रक्षा करने के इजरायल के अधिकार का बचाव किया है। अगर सऊदी अरब, जॉर्डन, और यूएई जैसी क्षेत्रीय ताक़तें भी इजरायल को अपनी रक्षा करने में उसकी मदद के लिए अपने पश्चिमी मित्रदेशों के साथ खड़े हो जाते हैं तो यह इस क्षेत्र के लिए नया मोड साबित हो सकता है। इन देशों ने अक्टूबर 2024 में यही किया था जब ईरान ने इजरायल पर 180 बैलिस्टिक मिसाइलों से निशाना साधा था। इन देशों को भी एक तरह का भय सताता है, और वे चाहेंगे कि ईरान कमजोर तथा परमाणु शक्ति विहीन देश बना रहे। उनके लिए और बेहतर बात तो यह होगी कि ईरान में शिया हुकूमत नाकाम हो जाए, लेकिन यह खूवाहिश जल्दी पूरी होती नहीं दिखती है।

इस 'ऐतिहासिक घड़ी' पर कई इजरायली नेता जबकि एक-दूसरे को बधाई दे रहे हैं, तब इजरायल वास्तव में कहां खड़ा है? क्या यह 1967 वाले युद्ध की पुनरावृति है, जिसने इस क्षेत्र में इजरायल की सैन्य तकदीर बदला दी थी? अमेरिका और दूसरे मित्र देशों से मिली सुरक्षा की इस्पाती गारंटी और सैन्य सहायता के कारण इजरायल ईरान से यह जंग जीत सकता है। इजरायल ने बेशक एकतरफा कार्रवाई की लेकिन जब वजूद का सवाल आता है तब वह अकेला नहीं है। ईरान का धर्म शासित 'गणतंत्र' हाल में लंबे समय से घरेलू चुनौतियों से जूझता रहा है, और इजरायल तथा अमेरिका के खिलाफ भीषण युद्ध में सरकार भी गिर सकती है। रूस ईरान को हथियारों से ज्यादा मदद करने की स्थिति में नहीं है। पुतिन की पोल खुल चुकी है और ट्रंप उन्हें बहुत पसंद भी नहीं करते क्योंकि उन्होंने ट्रंप को यूक्रेन से समझौता करवाने की मध्यस्थता से मना कर दिया था। वे अब ट्रंप के खिलाफ खुली जंग नहीं छेड़ सकते।

ईरान अगले एक दशक तक परमाणु शक्ति विहीन देश बना भी रहेगा तब भी नेतन्याहू की दादागीरी के कारण इजरायल खुद को बेहतर सुरक्षित स्थिति में नहीं पाएगा। यह एक विडंबना ही है। 1967 के बाद से इस क्षेत्र में इजरायल का सैन्य वर्चस्व रहा है लेकिन इसके बावजूद इजरायली लोग शायद ही सुरक्षित हैं, जैसा कि अक्टूबर 2023 में उजागर भी हो गया। हमास के साथ इसकी जंग और कब्जे के जरिए संघर्ष का मुक़ाबला करने की पूरी कोशिश इजरायल की दुखती रग रही है। अतीत में हासिल असंख्य सैन्य विजय और हमले की पहल ने इजरायल की सुरक्षा या इस क्षेत्र में सामान्य स्थिति की बहाली में मदद नहीं की। संघर्षों का राजनीतिक समाधान बहुत प्रिय नहीं हुआ करता है और यह कष्टप्रद समझौतों की मांग कर सकता है, लेकिन यह सच्ची राष्ट्रीय सुरक्षा देता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

क्रैश के बाद 5 दिन में दूसरी बार कैंसिल अहमदाबाद-लंदन फ्लाइट

उड़ान से पहले एयर इंडिया प्लेन में फिर से आई तकनीकी खामी

एयरलाइन ने किया साफ, बोली- हमारे पास विमानों की कमी है

कोलकाता (एजेंसी)। अहमदाबाद में मंगलवार को प्लेन क्रैश की घटना के बाद 5 दिन में अहमदाबाद से लंदन जा रही एअर इंडिया की लगातार दूसरी फ्लाइट कैंसिल कर दी गई है।

इसके पीछे तकनीकी खामी को वजह बताया गया है। आज फ्लाइट संख्या एआई-159 अहमदाबाद से दोपहर 1.10 बजे लंदन के लिए उड़ान भरने वाली थी। जानकारी के मुताबिक, फ्लाइट के टेकऑफ से कुछ घंटे पहले ही इस तकनीकी खराबी का पता चला। इससे पहले सोमवार को भी अहमदाबाद से लंदन की फ्लाइट रद्द की गई थी। आज की फ्लाइट कल के लिए रिशेड्यूल की जाएगी। आज की फ्लाइट कैंसिल होने के बाद एक यात्री ने कहा, यह गलत है।

- **एयर इंडिया ने अहमदाबाद-लंदन फ्लाइट का नाम बदला**–प्लेन क्रैश के बाद एअर इंडिया ने अहमदाबाद-लंदन फ्लाइट का नंबर बदलने का फैसला किया है। अब यह एआई-159 होगा। वापसी की उड़ान का भी नंबर बदलकर एआई-160 किया जाएगा। पहले इस फ्लाइट का नंबर एआई-171 था। इससे पहले 2014 में किसी एयरलाइन ने अपनी उड़ान संख्या बदली थी। मलेशियन एयरलाइंस की कुआलालंपुर से बीजिंग जा रही उड़ान एमए 370 के लापता हो जाने के बाद, उस रूट की फ्लाइट संख्या को बदलकर एमए 318 कर दिया गया था। सैन फ्रांसिस्को से मुंबई जा रही एयर इंडिया की फ्लाइट में सोमवार रात को तकनीकी खराबी आ गई, जिसके चलते यात्रियों को मंगलवार सुबह कोलकाता एयरपोर्ट पर प्लेन से उतारना पड़ा। फ्लाइट नंबर एआई 180 कोलकाता होते हुए मुंबई जा रही थी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद का निर्णय

दो लाख नवीन पद होंगे निर्मित नौ साल बाद मिलेगा प्रमोशन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा मध्यप्रदेश लोक सेवा पदोन्नति नियम, 2025 का अनुमोदन किया गया है। अनुमोदन अनुसार आरक्षित वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित कर उनके हितों को संरक्षित किया गया है। अनुसूचित जनजाति के लिये 20 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति के लिये 16 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोकसेवकों को भी मेरिट के आधार पर पदोन्नति प्राप्त करने का अवसर दिया गया है।

वर्तमान वर्ष में ही आगामी वर्ष की रिक्तियों के लिए पदोन्नति समिति की बैठक कर चयन सूची बनाये जाने का प्रावधान किया गया है, अर्थात अग्रिम डी.पी.सी. के प्रावधान किये गये है। पदोन्नति के सूत्र में वरिष्ठता का पर्याप्त ध्यान रखा गया है। वरिष्ठ लोक सेवकों में से मेरिट के अनुसार न्यूनतम अंक लाने वाले लोक सेवक पदोन्नति के लिए पात्र होंगे, प्रथम श्रेणी के लोक सेवकों के लिए merit cum seniority का प्रावधान किया गया है।

पदोन्नति के सूत्र में कार्यदक्षता को प्रोत्साहित किया जाना लक्षित है, पदोन्नति के लिए अपात्रता का स्पष्ट निर्धारण किया गया है। किन परिस्थितियों में कोई लोक सेवक अपात्र होगा एवं दण्ड का क्या प्रभाव होगा यह स्पष्ट रूप से लेख किया गया है। किसी भी विभागीय पदोन्नति समिति बैठक के सन्दर्भ में निर्णय के पुनर्विलोकन के लिए रिव्यू डी.पी.सी. की बैठक आयोजित किये जाने के लिये स्पष्ट प्रावधान किये गये है। नवीन पदोन्नति नियमो में परिभ्रमण की व्यवस्था समाप्त की गई है। इससे पदोन्नति के लिए अधिक पद हो सकेंगे। पदोन्नति समिति को शासकीय सेवक की उपयुक्तता निर्धारण करने का अधिकार दिया गया है

चतुर्थ श्रेणी के लिये अंक व्यवस्था नहीं होगी, केवल पदोन्नति के लिए उपयुक्त होने पर ही पदोन्नति प्राप्त हो सकेगी। अर्हकारी सेवा के लिए किसी वर्ष में की गई आंशिक सेवा को भी पूर्ण वर्ष की सेवा माना जायेगा, यदि वर्ष के एक भाग की सेवा भी की गई है तो उसे पूर्ण वर्ष की सेवा माना जाएगा। यदि किसी वर्ष में 6 माह का ही गोपनीय प्रतिवेदन उपलब्ध है तो उसे पूर्ण वर्ष के लिये मान्य किया जा सकेगा। यदि गोपनीय प्रतिवेदन उपलब्ध नहीं होने के कारण किसी की पदोन्नति रुकती है तो उसे पदोन्नति प्राप्त होने पर पूरी वरिष्ठता दी जायेगी।

म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड योजनाओं के लिए 5 हजार 163 करोड़ रुपये

मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश की विद्युत पारेषण कंपनी द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2029-30 के लिए प्रचलित/निर्माणाधीन पूंजीगत योजनाओं और अनुमानित लागत राशि 5 हजार 163 करोड़ रूपये का अनुमोदन दिया गया। निर्णय अनुसार म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड के लिए योजना लागत राशि 5 हजार 163 करोड़ रुपये का अनुमोदन प्रदान किया गया। योजना के लिए 20 प्रतिशत अंशपूंजी राज्य शासन के द्वारा तथा शेष 80 प्रतिशत ऋण वित्तीय संस्थाओं/बैंकों से प्राप्त किया जाएगा।

पंजाब में टेंशन बढ़ा रहा अमृतपाल-2

समर्थन में कट्टपंथी, कमल कौर भाभी के हत्यारे को हीरो बताने वाले पोस्टर लगे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में चर्चित सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर कंचन कुमारी के कत्ल के आरोपी अमृतपाल सिंह मेहरों को हीरो बताने वाले पोस्टर लगे हैं। कंचन कुमारी सोशल मीडिया पर कमल कौर भाभी के नाम से चर्चित थी। कमल कौर भाभी अक्सर इंस्टाग्राम समेत कई प्लेटफॉर्म्स पर वीडियोज बनाती थीं और उन्हें धमकियां मिल रही थीं। अमृतपाल सिंह मेहरों समेत कई कट्टरपंथियों ने उन्हें धमकियां दी थीं कि अश्लील वीडियो बनाना बंद करे वरना मुश्किल होगी। कमल कौर भाभी के कत्ल के बाद एक वीडियो भी सामने आया था, जिसमें अमृतपाल सिंह मेहरों ने हत्या की जिम्मेदारी ली थी। बता दें कि पहले ही एक कट्टरपंथी अमृतपाल सिंह प्रशासन की मुश्किलें बढ़ाता रहा है, जो फिलहाल सांसद है और जेल में बंद है।

2027 विधानसभा चुनाव 'इंडी गठबंधन' के साथ लड़ेंगे अखिलेश

- सपा प्रमुख ने कर दिया बड़ा ऐलान, यूपी में शुरू हो गई तैयारी

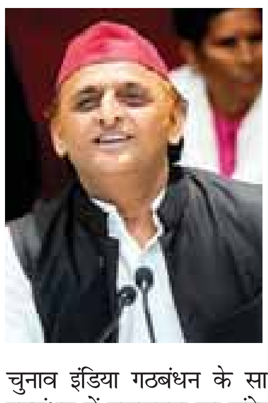

लखनऊ (एजेंसी)। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक बार फिर 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर अपनी रणनीति स्पष्ट कर दी है। लखनऊ में आयोजित प्रेस वार्ता में अखिलेश ने ऐलान किया कि वह इंडिया गठबंधन के साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगे। इससे पहले यूपी दौरे पर आए कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडे ने भी कहा था कि कांग्रेस गठबंधन सहयोगी के साथ विधानसभा चुनाव लड़ेगी। अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी 2027 का विधानसभा चुनाव इंडिया गठबंधन के साथ मिलकर लड़ेगी। उनके इस बयान से गठबंधन में एकजुटता का संदेश गया है। साथ ही, यह आने वाले चुनावी समीकरणों को लेकर भी एक महत्वपूर्ण संकेत है। अखिलेश यादव ने कानपुर के सीएमओ के तबादले पर सरकार को घेरा।

नहीं मान रहे इजराइल-ईरान, लड़ाई और तेज

- ईरान-इजराइल का एक-दूसरे के खिलाफ जबरदस्त वार
- ईरान ने मोसाद हेडक्वार्टर पर किया हमला, इजराइल ने ईरानी सेना के डिप्टी कमांडर को मारा

तेहरान/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल और ईरान के बीच 5वें दिन भी संघर्ष जारी है। इस बीच ईरान के टॉप सैन्य अधिकारी मेजर जनरल अली शादमानी की एक हवाई हमले में मौत हो गई है। यह जानकारी ईरान की सेना ने दी है। शादमानी ईरान की खतम-अल-अनबिया हेडक्वार्टर्स यानी सैन्य आपात कमान के प्रमुख थे। उन्होंने 4 दिन पहले ही यह पद संभाला था। उन्हें इजराइली हमले में मारे गए मेजर जनरल गुलाम अली राशिद की जगह यह जिम्मेदारी दी गई थी। राशिद की मौत पिछले शुक्रवार को हुई थी। ईरान ने तेल अवीव में इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के हेडक्वार्टर

पर हवाई हमला किया। इसके अलावा मिलिट्री इंटेलीजेंस से जुड़ी खुफिया एजेंसी की बिल्डिंग को भी निशाना बनाया है। इजराइली हमलों में अब

224 ईरानी मारे जा चुके है, जबकि 1,481 लोग घायल हुए हैं। वहीं, इजराइल में अब तक 24 लोग मारे गए हैं, जबकि 600 से ज्यादा घायल हैं।

ट्रम्प जी-7 समिट छोड़कर अमेरिका पहुँचे

कनाडा के अल्बर्टा राज्य के कैननास्किस में चल रहे जी 7 समिट में इजराइल-ईरान तनाव का असर दिख रहा है। समिट के पहले दिन जी 7 देशों ने इजराइल का समर्थन किया। मंगलवार सुबह साझा बयान में कहा कि इजराइल को अपनी आत्मरक्षा करने का अधिकार है। ईरान के पास कभी भी परमाणु हथियार नहीं होना चाहिए। उधर, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प समिट को बीच में छोड़कर अमेरिका रवाना हो गए हैं। व्हाइट हाउस ने बताया कि मिडिल ईस्ट में तनाव के चलते ट्रम्प ने यह फैसला लिया है।

ईरान में फंसे भारतीय छात्रों की वापसी हो गई शुरू

तेहरान/नई दिल्ली (एजेंसी)। इजराइल- ईरान में जारी संघर्ष के बीच भारत ने अपने नागरिकों को ईरान से निकालना शुरू कर दिया है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया है कि कुछ भारतीय नागरिकों को आर्मेनिया बॉर्डर के रास्ते देश से बाहर निकाला गया है। इसके अलावा राजधानी तेहरान से भी भारतीय छात्रों को सुरक्षित जगहों पर भेज दिया है। सूत्रों ने बताया है कि भारत ने अपने छात्रों को निकालने के लिए ईरान में आर्मेनिया के राजदूत से बात की थी। 110 भारतीय छात्रों का एक बैच कल आर्मेनिया बॉर्डर पहुंचा था। छात्रों को आर्मेनिया बॉर्डर पर नॉरदुज चौकी से बसों से निकाला जा रहा है। ईरान में 1,500 स्टूडेंट्स सहित लगभग 10 हजार भारतीय फंसे हैं। मौजूदा हालात में एयरपोर्ट भले ही बंद हैं, लेकिन लैंड बॉर्डर्स खुले हुए हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 41°c
न्यूनतम 35°c

2

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 18 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

अमरनाथ यात्रा मार्ग पर 1 जुलाई से नहीं उड़ेंगे ड्रोन

● जम्मू-कश्मीर सरकार ने 'नो फ्लाई जोन' घोषित किया ● सुरक्षा व्यवस्था और बेहतर करने के लिए हुआ फैसला

श्रीनगर (एजेंसी)। अमरनाथ यात्रा के लिए सुरक्षा व्यवस्था को और पुख्ता बनाने के लिए जम्मू-कश्मीर सरकार ने पूरे यात्रा मार्ग को 'नो फ्लाइंग जोन' घोषित किया है। यह फैसला पहलगाम हमले को ध्यान में रखकर लिया गया है। इसके तहत अमरनाथ यात्रा के पहलगाम और बालटाल वाले दोनों रास्तों पर हर तरह के हवाई उपकरण- ड्रोन, यूएवी, और गुब्बारे प्रतिबंधित रहेंगे। यह फैसला 1 जुलाई से 10 अगस्त तक प्रभावी रहेगा। यात्रा 3 जुलाई से 9 अगस्त तक चलेगी। हालांकि, ये प्रतिबंध मेडिकल इवैक्युएशन, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा बलों की तरफ से की जा रही निगरानी उड़ानों पर लागू नहीं होंगे। इनके लिए एक अलग स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर जल्द ही जारी की जाएगी। काफिले की सुरक्षा के लिए पहली बार जैमर लगाए जा रहे हैं, जिसे केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल सुरक्षा प्रदान करेगी। सशस्त्र बलों की 581 कंपनियां तैनात की जाएंगी। लगभग 42000 से 58,000 जवान तैनात होंगे। यात्रा रूट पर यात्रियों की सुरक्षा के लिए 156 कंपनियां पहले से जम्मू-कश्मीर में तैनात थीं, जबकि 425 नई कंपनियों को

10 जून तक तैनात किया जाएगा। श्रद्धालुओं को कंधे पर बिठाकर ले जाने वाले पोनी वालों का वैरिफिकेशन होगा। क्रिमिनल रिकॉर्ड वाले पोनी/पिट्ठू सर्विस चलाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन घोड़े-खच्चर की भी टैगिंग की गई है, जिन पर बैठकर श्रद्धालु यात्रा पर जाएंगे। ताकि रूट से हटने पर उन्हें रियल टाइम ट्रैक किया जा सके। रोड ओपनिंग पार्टी, खतरों पर तुरंत एक्शन के लिए क्विक एक्शन टीम, बॉम्ब डिफ्यूजल स्क्वॉड, के 9 यूनिट्स (विशेष रूप से प्रशिक्षित खोजी कुत्ते) और ड्रोन से निगरानी होगी। अमरनाथ तीर्थयात्रियों पर पहले भी कई आतंकवादी हमले हो चुके हैं। अगस्त 2000 में नुनवान बेस कैंप पर हुए आतंकवादी हमले में दो दर्जन अमरनाथ तीर्थयात्रियों समेत 32 लोग मारे गए थे। जुलाई 2001 में एक हमले में तेरह लोग मारे गए थे, जब आतंकवादियों ने यात्रा के शेषनाग बेस कैंप पर हमला किया था। 2002 में चंदनवारी बेस कैंप पर 11 अमरनाथ यात्री मारे गए थे। जुलाई 2017 में कुलगाम जिले में अमरनाथ तीर्थयात्रियों से भरी बस पर हुए हमले में आठ लोग मारे गए थे। अमरनाथ शिवलिंग एक अद्भुत प्राकृतिक हिमनिर्मित संरचना है, जिसे हिमानी शिवलिंग कहा जाता है। अमरनाथ गुफा 3,888 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

सभी मतदान केंद्रों पर लगेंगे कैमरे, होगी लाइव मॉनीटरिंग

अभी तक 50 फीसदी सेंटर्स पर ही होती थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। वोटिंग प्रोसेस की निगरानी बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग (ईसी) अब सभी मतदान केंद्रों की वेबकास्टिंग करेगा। ईसी ने सोमवार को बताया कि बिहार विधानसभा चुनाव से यह फैसला लागू किया जाएगा। वेबकास्टिंग डेटा आयोग के इंटरनल यूज के लिए होगा। मतलब इसे सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। अभी तक 50 फीसदी पोलिंग स्टेशन की ही वेबकास्टिंग की जाती थी। इंटरनेट कनेक्टिविटी वाले इलाकों में वेबकास्टिंग की जाएगी। जिन इलाकों में इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है वहां वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी जैसी ऑप्शनल व्यवस्था की जा सकती है। प्रदेश, जिला और विधानसभा सीट स्तर पर वेबकास्टिंग मॉनिटरिंग कंट्रोल रूम बनाया जाएगा। इसकी देखरेख और निगरानी के लिए प्रत्येक स्तर पर नोडल ऑफीसर नियुक्त किए जाएंगे। केंद्र सरकार ने 20 दिसंबर, 2024 को पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी, वेबकास्टिंग फुटेज और उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे कुछ इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स को पब्लिक करने से रोकने के लिए नियम बदले थे। ईसी की सिफारिश पर कानून मंत्रालय ने द कंडक्ट ऑफ इलेक्शन रूल- 1961 के नियम 93(2)(3) में बदलाव किया था। नियम 93 कहता है- चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे। इसे बदलकर चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज नियमानुसार पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे कर दिया गया था। नियम में बदलाव के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में कांग्रेस की याचिका लंबित है।

भारत बना दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक देश

● काफी पीछे रह गया है चीन

नई दिल्ली (एजेंसी)। बुद्ध का देश भारत हमेशा शांति में यकीन रखता है, लेकिन अपनी सामरिक सुरक्षा के लिए वह 'भय बिनु होय न प्रीत' का भी पालन करता है। अपनी सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए रक्षा क्षेत्र में मेक इन इंडिया अभियान के तहत आत्मनिर्भरता के साथ जरूरी रक्षा हथियारों की वह बेहिचक खरीद भी कर रहा है। यही वजह है कि पिछले कई साल से रक्षा आयात के मामले में वह शीर्ष देशों में शुमार है। हालिया रिपोर्ट बताती है कि भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक देश है। भारत के इन्हीं प्रयासों का रौद्र रूप आपरेशन सिंदूर था।

भोपाल में 8 किलो का ट्यूमर निकालने 8 घंटे चली सर्जरी

दर्द, उल्टी, भूख न लगने जैसी थी समस्याएं ; जांच में किडनी के पास मिला ट्यूमर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 18 साल की युवती बीते 6 महीने से लगातार पेट दर्द, उल्टी, भूख न लगना और तेजी से वजन कम होने जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रही थी। लंबे समय तक मेडिकल स्टोर से दवा लेकर और पास के क्लिनिक में इलाज चलता रहा। लेकिन, आराम नहीं मिला। जब स्थिति बिगड़ने लगी तो परिजन उसे सागर मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल (एसएमएच) लेकर पहुंचे। जहां कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. शुभम पांडे ने जांच कराई तो 8 किलो का ट्यूमर होने की बात सामने आई।

डॉक्टरों की टीम ने एक जटिल ऑपरेशन का प्लान तैयार किया, जिसके तहत युवती के पेट से 8 किलो का ट्यूमर निकाला गया। यह सर्जरी करीब 8 घंटे तक चली और युवती की जान बच सकी।

किडनी के पास था ट्यूमर- जांच में सामने आया कि युवती के पेट में बाईं किडनी और पेनक्रियाज के पास एक ट्यूमर विकसित हो चुका है। जो उसके पेट के महा धमनियों से भी चिपका हुआ था। यह स्थिति बेहद जटिल और जोखिम भरी थी।

इन्होंने की सफल सर्जरी

डॉ. शुभम पांडे ने एनेस्थीसिया व क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ. महेश एस. कुर्वे और उनकी टीम के साथ मिलकर सर्जरी पूरी की। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार, सर्जरी के बाद युवती को कुछ दिन पोस्ट-ऑपरेटिव निगरानी में रखा गया और अब उसकी हालत स्थिर है। उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। अब वह रूटीन फॉलो-अप में है।डॉ. शुभम पांडे ने बताया कि यह ट्यूमर बहुत ही दुर्लभ और जटिल था। जो किडनी और पेनक्रियाज जैसे अहम अंगों को प्रभावित कर रहा था। समय पर सर्जरी न होती तो यह युवती की जान के लिए खतरा बन सकता था।

संभल में जहां हुई हिंसा, अब 'सीसीटीवी' से हो रही सुरक्षा

सत्यव्रत पुलिस चौकी पर बना हाईटेक कंट्रोल रूम

संभल (एजेंसी)। शहर में शांति व्यवस्था और सुरक्षा को और पुख्ता करने के लिए त्रिनेत्र योजना के तहत शहर के संवेदनशील और व्यस्त क्षेत्रों में 30 स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा चुके हैं। योजना के तहत कुल 224 हाई-रिजाल्यूशन कैमरे लगाए जाने हैं, जिनका सीधा कंट्रोल सत्यव्रत पुलिस चौकी से किया जाएगा। इस परियोजना पर करीब 2 करोड़ रुपये खर्च होने हैं। 24 नवंबर 2024 को हुई हिंसा के बाद से शहर में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है। दरअसल, शहर की पहचान संवेदनशील क्षेत्र की है।

● **दो करोड़ की लागत से होगा सुरक्षा का कवच तैयार-** इस हाईटेक निगरानी प्रणाली पर लगभग दो करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। कैमरों की गुणवत्ता, स्टोरेज क्षमता, और नेटवर्किंग को ध्यान में रखते हुए योजना को चरणबद्ध तरीके से लागू किया जा रहा है। प्रथम चरण में 30 स्थानों पर कैमरे लगाए जा चुके हैं और शेष 30 स्थानों पर कार्य तेजी से जारी है। वहीं इस योजना से कानून व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने में काफी मदद मिलेगी। खासकर त्योहारों, जुलूसों या किसी भी बड़े सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान यह कैमरे प्रशासन की आंख और कान बनेंगे।

फ्लाईओवर देखने पहुंचे विधायक रामेश्वर शर्मा, बोले-जल्दी पूरा करें

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) में 305 करोड़ रुपए से बन रहे एलिवेटेड फ्लाईओवर का हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा ने निरीक्षण किया। वे मंगलवार सुबह फ्लाईओवर के काम को देखने पहुंच गए। पीडब्ल्यूडी अफसरों से बोले कि काम जल्दी पूरा करें। ताकि, लाखों लोगों को फायदा मिल सके।

विधायक शर्मा ने बिजली के पोल की शिफ्टिंग सहित फ्लाइओवर निर्माण संबंधी निर्देश दिए। बता दें कि यह फ्लाईओवर लाऊखेड़ी सीवेज पंप से झूलेलाल विसर्जन घाट तक 3 किलोमीटर लंबा रहेगा। 19 मीटर (60 फीट) चौड़े इस एलिवेटेड डबल डेकर फ्लाई ओवर का निर्माण किया जा रहा है। यह प्रदेश का पहला डबल डेकर फ्लाईओवर ब्रिज बन रहा है।

ताला तुड़वाकर विधायक बोले-अतिक्रमणकारियों पर कार्रवाई करो- विधायक शर्मा ने इस दौरान फ्लाईओवर एवं इसके सर्विस रोड के ड्रेनेज का अवलोकन करते हुए पाया कि किसी ने बकायदा लोहे की चादर से नाले को ढंक रखा है। शर्मा में तत्काल इस चादर पर लगे ताले को तुड़वाया और अतिक्रमणकारी पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

सोनम ने किया इशारा, विशाल ने राजा को मार डाला

शिलॉन्ग एसपी बोले-हमले के वक्त राजा के सामने थी, खून बहा तो दूर चली गई

शिलॉन्ग/इंदौर (एजेंसी)। शिलॉन्ग पुलिस मंगलवार सुबह राजा रघुवंशी मर्डर केस के आरोपियों को लेकर सोहरा पहुंची। सोहरा के वेई सावडोंग फॉल्स पर क्राइम सीन रीक्रिएशन किया। पूर्वी खासी हिल्स एसपी विवेक स्येम ने बताया, हमें पता चला है कि राजा को धारदार हथियार से मारा गया था। सोनम ने राजा पर हमला करने का इशारा किया था। इशारा मिलते ही विशाल उर्फ विक्की ने दोनों हाथों से वार कर दिया। राजा के सिर से खून बहने लगा। घटना के वक्त सोनम कहा थी, मीडिया

के इस सवाल के जवाब में एसपी ने बताया- घटना के वक्त सोनम सामने थी, राजा उसके पीछे था। विशाल राजा की दाईं तरफ था और आकाश उसके पीछे बायीं तरफ था। आनंद भी राजा की बायीं तरफ था। इसी समय विशाल ने राजा के सिर पर वार किया। राजा को मारा गया और खून निकलने लगा, तो सोनम वहां से दूर चली गई। तीनों आरोपियों ने शव को नीचे फेंक दिया। बता दें, रीक्रिएशन के समय फोरेंसिक डिपार्टमेंट और एसडीआरएफ की टीमें भी मौजूद रहीं।

भारत को अंडमान में मिला 2 लाख करोड़-लीटर का तेल-भंडार

● पेट्रोलियम मंत्री ने कहा-इससे भारत की जीडीपी बढ़कर 20 ट्रिलियन डॉलर हो सकती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत को अंडमान सागर में करीब 2 लाख करोड़ लीटर का क्रूड ऑयल का भंडार मिल सकता है। यह बात केंद्रीय पेट्रोलियम और नेचुरल गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कही है। हरदीप सिंह ने कहा कि यह अनुमान सही निकला तो इससे भारत की जीडीपी करीब 5 गुना तक बढ़ सकती है। हरदीप सिंह पुरी ने बताया कि अंडमान सागर में कच्चे तेल और गैस का यह बड़ा भंडार दिखा है और सरकार

ने इसे निकालने की तैयारियां शुरू कर दी है। माना जा रहा है कि इसके मिलने के बाद हमारी एनर्जी की जरूरतें एक झटके में पूरी हो जाएंगी। मंत्री ने कहा कि यह पेट्रोलियम भंडार हाल ही में गुयाना में मिले (11.6 बिलियन बैरल) कच्चे तेल के रिजर्व जितना हो सकता है। अगर खोज और शोध में यह अनुमान सही निकला तो भारत की जीडीपी एक झटके में 3.7 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 20 ट्रिलियन डॉलर हो सकती है। हरदीप सिंह पुरी ने बताया कि अभी अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में कच्चा तेल निकालने का काम चल रहा है।

पाकिस्तान गुरुधामों के लिए अब नहीं जाएगा सिख जत्था

● भारत-पाक विवाद को लेकर एसजीपीसी का फैसला

अमृतसर (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच जारी सीमा तनाव को देखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिख श्रद्धालुओं का जत्था पाकिस्तान भेजने से मना कर दिया है। महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि पर पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारों की यात्रा पर हर साल जत्था रवाना होता था। इस साल ये यात्रा 29 जून को लाहौर के लिए रवाना होनी थी। एसजीपीसी ने कहा कि मौजूदा हालात में यह निर्णय सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए लिया गया है। इस यात्रा के लिए पहले ही 200 से अधिक श्रद्धालुओं ने आवेदन किया था और अपने पासपोर्ट एसजीपीसी के पास वीजा संबंधित कार्रवाई के लिए भेजे थे। इस बीच, एसजीपीसी प्रमुख ने केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार की उस हरकत की कड़ी आलोचना की, जिसमें उन्होंने एक सिख युवक पर चप्पल फेंकी थी।

पोटाश का हब बनेगा राजस्थान का बीकानेर जिला

रेगिस्तान में आत्मनिर्भरता की दस्तक के बाद उम्मीदों के लगे पंख

जयपुर (एजेंसी)। बीकानेर, जो अब तक अपने इतिहास, विरासत और स्वादिष्ट भुजिया के लिए जाना जाता था, आज आत्मनिर्भर भारत की नई उम्मीद बन कर उभर रहा है। यह जिला न केवल भारत के 95 फीसदी पोटाश भंडार का घर है, बल्कि इसकी मिट्टी यूक्रेन की क्ले से मेल खाती है जो भारतीय सिरेमिक उद्योग का प्रमुख कच्चा माल है। फिर भी, यह इलाका नीतिगत विलंब और बुनियादी ढांचे की कमी के कारण आज भी औद्योगिक विकास से वंचित है। भारत उर्वरकों के लिए पोटाश का एक बड़ा उपभोक्ता है, लेकिन इसकी 100 फीसदी आपूर्ति अब तक आयात से ही होती रही है। वर्ष 2024-25 में भारत ने पोटाश आयात पर 8,000 करोड़ से अधिक खर्च किए। बीकानेर और हनुमानगढ़ जैसे जिलों में मौजूद पोटाश भंडार इस आयात निर्भरता को समाप्त कर सकते हैं।

हालांकि, पहले खनन के लिए रखी गई शर्तें कठोर थीं, कंपनियों को पोटाश के साथ-साथ अन्य खनिजों का भी खनन करना जरूरी था। इससे लागत बहुत बढ़ गई, और वेदांता जैसी कंपनियां पीछे हट गईं। 2024 में नीति में बदलाव किया गया और अब केवल पोटाश खनन की अनुमति दी गई है। हनुमानगढ़ में वेदांता को नया टेंडर मिल चुका है, लेकिन बीकानेर, जो अधिक संसाधन संपन्न है, अभी भी टेंडर प्रक्रिया से बाहर है। मोरबी, गुजरात भारत का सिरेमिक हब है, लेकिन यह यूक्रेन से आयातित क्ले पर निर्भर है, जिसकी सालाना लागत लगभग .1.4 बिलियन है। बीकानेर के गांवों चांदी, गुढ़ा, मुढ़, और कोलायत की मिट्टी वैज्ञानिक रूप से यूक्रेनी क्ले जैसी है, बल्कि गुणवत्ता में उससे बेहतर पाई गई है। वर्मोरा, नेक्सियन और आरएके सिरेमिक्स जैसी कंपनियां स्थानीय क्ले में रुचि दिखा चुकी हैं लेकिन बीकानेर में सूखा बंदरगाह (ड्राय पोर्ट) और माल परिवहन की सुविधाओं की कमी बड़े पैमाने पर उपयोग को रोक रही है। राज्य सरकार ने 2022-23 में ड्राय पोर्ट की घोषणा की थी, लेकिन अब तक निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ है। बीकानेर की पहचान उसके स्नेक्स और मिठाइयों से जुड़ी है।

19 जून से 6 जुलाई तक होगा मूंग और उड़द उपार्जन के लिए पंजीयन

● 27 जून को एमएसएमई-डे पर रतलाम में होगी क्षेत्रीय उद्योगों और रोजगार पर केंद्रित समिट ● लुधियाना में 7 जुलाई को होगा एमएसएमई पर राष्ट्रीय इंटरएक्टिव सेशन ● भोपाल मेट्रो के प्रथम चरण का लोकार्पण शीघ्र होगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य शासन द्वारा किसानों के हित में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर मूंग और उड़द के उपार्जन का निर्णय लिया गया है। प्रदेश के 36 मूंग उत्पादक जिलों में 8682 रुपए प्रति क्विंटल की दर से मूंग और 13 उड़द उत्पादक जिलों में 7400 रुपए प्रति क्विंटल की दर से उड़द उपार्जित की जाएगी। कृषक 19 जून से 6 जुलाई तक पंजीयन करा सकेंगे, इसके बाद 7 जुलाई से 6 अगस्त तक उपार्जन किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को मंत्रालय में आयोजित मंत्रि-परिषद की बैठक के पहले मंत्रीगण को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में निवेश प्रोत्साहन के लिए विभिन्न गतिविधियां संचालित हैं। इस क्रम में गंगा दशमी के अवसर पर उज्जैन में वैलनेस पर केंद्रित वृहद आयोजन संपन्न हुआ। इसी क्रम में 27 जून को

एमएसएमई-डे पर रतलाम में क्षेत्रीय उद्योगों और रोजगार पर समिट आयोजित की जा रही है। लुधियाना में 7 जुलाई को एमएसएमई पर राष्ट्रीय इंटरएक्टिव सेशन भी होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल मेट्रो के प्रथम चरण का लोकार्पण माह सितम्बर में करने की समय-सीमा तय है। भोपाल मेट्रो के लोकार्पण के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से अनुरोध किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली बहनों को रक्षाबंधन के अवसर पर 250 रुपए राशि का अतिरिक्त रूप से भुगतान किया जाएगा। इस वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का एक दशक पूरा हो रहा है। इस उपलक्ष्य में योग संगम के अंतर्गत 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के अधिक से अधिक नगरीय निकायों, वार्डों, पंचायतों में योग पर कार्यक्रम आयोजित कर देश में रिकार्ड स्थापित करने का प्रयास किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में पर्यटन में एक वर्ष में 19.6 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। वर्ष 2024 में 13 करोड़ 41 लाख पर्यटक मध्यप्रदेश आए। यह संख्या वर्ष 2023 की तुलना में 19.6 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2024 में 1 लाख 67 हजार विदेशी पर्यटक मध्यप्रदेश आए। पर्यटन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश तेजी से बढ़ता राज्य है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रीगण को उनके विभागों में संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करने तथा उन्हें और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सुझाव साझा करने के निर्देश भी दिए।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल को सांसद डॉ. मिश्रा ने 'विकसित भारत संकल्प-2047' पुस्तक भेंट की

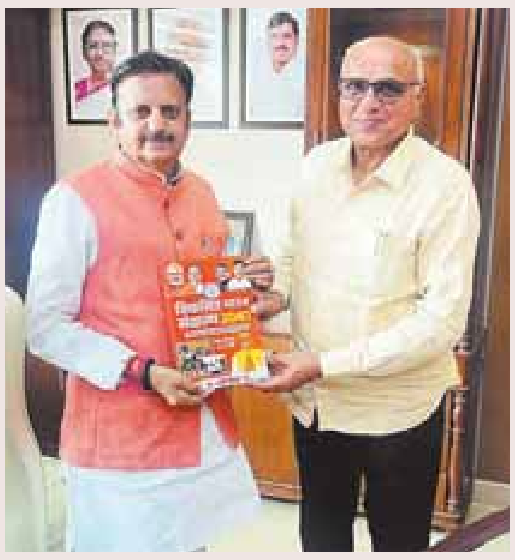

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल को सीधी के सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने मंत्रालय भोपाल में 'विकसित भारत संकल्प-2047' शीर्षक से प्रकाशित सेवा संकल्प के 1 वर्ष पुस्तक की प्रति भेंट की। पुस्तक में सीधी संसदीय क्षेत्र में गत एक वर्ष के विकास कार्यों का विवरण है। पुस्तक 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने की दिशा में किए गए प्रयासों को प्रतिबिंबित करती है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सांसद डॉ. मिश्रा के संकल्पबद्ध सेवाभाव की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार और केंद्र सरकार एकजुट होकर प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'सशक्त भारत' के विजन को साकार करने के लिये प्रतिबद्ध प्रयास कर रही हैं।

भोपाल में तलवार लहराने वाले आरोपी का निकाला जुलूस

● सोशल मीडिया पर वीडियो हुआ था वायरल; पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ा था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के तलैया थाना पुलिस ने धारदार तलवार लहराने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। यह कार्रवाई उस वीडियो के आधार पर की गई, जो सोमवार देर रात सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। वीडियो में एक युवक इतवारा क्षेत्र में खुलेआम तलवार लहराते नजर आ रहा था।

मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने आरोपी की पहचान कर मंगलवार तड़के उसे केवड़ के बाग इलाके से दबोच लिया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान शोएब कुरैशी पिता सलीम कुरैशी (उम्र 35 वर्ष) निवासी पंचायती मस्जिद के पास, थाना तलैया, भोपाल के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, आरोपी को तलवार के साथ पकड़ा गया

है। उसने भागने की कोशिश की, लेकिन पुलिस टीम ने घेराबंदी कर उसे दबोच लिया।

बुधवारा इलाके में पुलिस ने आरोपी का जुलूस निकाला

पुलिस ने मंगलवार को आरोपी का जुलूस बुधवारा इलाके में निकाला। इस दौरान आरोपी सड़कों पर खुद को 'बदमाश' बताते हुए कहता रहा- पुलिस हमारी बाप है, अपराध करना पापा है। आरोपी की यह हरकत लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी रही। पुलिस ने बताया कि आरोपी पर पहले भी आपराधिक मामले दर्ज हैं और उसका आपराधिक रिकॉर्ड खंगाला जा रहा है।

अवैध हथियार रखने की धाराओं में केस दर्ज

इस कार्रवाई को लेकर भोपाल पुलिस आयुक्त हरिनारायणचारी मिश्र, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अवधेश कुमार गोस्वामी, डीसीपी रियाज इकबाल, एडीसीपी शालिनी दीक्षित और एसीपी चंद्रशेखर पांडे के निर्देशन में टीम गठित की गई थी। तलैया थाना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अवैध हथियार रखने की धाराओं में केस दर्ज किया है।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धेय बालासाहेब देवरस की पुण्यतिथि पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक श्रद्धेय बालासाहब देवरस की पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्रद्धेय देवरस जी ने समाजिक समरसता की नींव पर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का पथ प्रदर्शित किया, उनके द्वारा प्रारंभ की गई इस यात्रा पर हम सभी लगातार आगे बढ़ रहे हैं।

पुण्यतिथि पर अर्पित की श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रपुरुष छत्रपति शिवाजी महाराज की पूज्य माता जीजाबाई की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजमाता जीजाबाई के दृढ़ संकल्प, संस्कार और मातृत्व ने भारत भूमि को महाराज शिवाजी जैसा राष्ट्रनायक दिया।
जीजाबाई जी का तपस्वी जीवन दुनिया की हर माता के लिए प्रेरणा और हर भारतीय के लिए आदर्श रहेगा।

बारिश के चलते जोधपुर-दिल्ली फ्लाइट की भोपाल में लैंडिंग

सिंगरौली में आकाशीय बिजली से दो बच्चियों की मौत; इंदौर समेत 15 जिलों में मानसून पहुंचा

भोपाल (नप्र)। जोधपुर से दिल्ली जा रही फ्लाइट को भोपाल डायवर्ट किया गया है। दिल्ली में ज्यादा बारिश होने के चलते फ्लाइट को भोपाल डायवर्ट कर एयरपोर्ट पर करीब 4:50 बजे शाम को लैंड कराया गया। फ्लाइट में केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत भी सवार हैं जो जोधपुर से दिल्ली जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के इंदौर समेत 15 जिलों में मंगलवार को मानसून ने दस्तक दी। एक दिन पहले सोमवार को 4 जिलों में मानसून पहुंचा था। इस तरह कुल 19 जिलों में मानसून एंट्री ले चुका है। इस दौरान प्रदेश में आंधी-बारिश का दौर भी जारी है।

मंगलवार को सिंगरौली में आकाशीय बिजली गिरने से दो बच्चियों की मौत हो गई। वहीं, भोपाल, राजगढ़, धार, रतलाम, छिंदवाड़ा, जबलपुर, मंडला, सतना, टीकमगढ़ समेत कई जिलों में बारिश दर्ज की गई।

बारिश की वजह से दिन के तापमान में भी गिरावट हुई है। शिवपुरी में ही पारा सबसे ज्यादा 40 डिग्री रहा। वहीं, सबसे कम तापमान इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में 28.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। 5 बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 34.4 डिग्री, इंदौर में 32.2 डिग्री, ग्वालियर में 38.5 डिग्री, उज्जैन में 33 डिग्री और जबलपुर में पारा 34.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

महापौर हेल्पलाइन में 16 दिन में 1728 शिकायतें, इनमें आधी पेंडिंग

मेयर बोलीं- सबसे ज्यादा सीवेज की शिकायत

भोपाल (नप्र)। महापौर हेल्पलाइन में जून के 16 दिन में कुल 1728 शिकायतें दर्ज की गईं। इनमें से लगभग आधी शिकायतें पेंडिंग है। महापौर मालती राय ने कहा कि सबसे ज्यादा सीवेज की शिकायत पेंडिंग है। बारिश का मौसम होने से दिक्कतें हो सकती हैं। इसलिए अफसरों से बात की है। ताकि, शिकायतें दूर की जा सकें। भोपाल के स्मार्ट सिटी कंट्रोल रूम से मंगलवार को महापौर राय ने मोबाइल पर अफसरों को कॉल करके निर्देश भी दिए। यहां महापौर ने 'महापौर महिला हेल्पलाइन' की समीक्षा की और हर विभाग के जिम्मेदारों को कॉल करके पेंडिंग शिकायतों के बारे में बताया।

टीकमगढ़ में तीन साल बाद कोरोना केस

जिला अस्पताल का टेक्नीशियन पॉजिटिव, डॉक्टर बेटे से मिलने गए थे ग्वालियर

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले में तीन साल बाद कोरोना का पहला मामला सामने आया है। जिला अस्पताल के नेत्र विभाग में कार्यरत टेक्नीशियन उमेश जैन कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। इंद्रपुरी कॉलोनी निवासी उमेश जैन 10 दिन पहले ग्वालियर गए थे। वहां वे अपने बेटे से मिलने गए थे, जो एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। टीकमगढ़ लौटने के बाद उन्हें बुखार और सांस लेने में तकलीफ हुई। 13 जून को जिला अस्पताल में उनका कोरोना टेस्ट किया गया। सैंपल बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज सागर भेजा गया। 16 जून को आई रिपोर्ट में वे पॉजिटिव पाए गए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शोभाराम रोशन ने बताया। उमेश जैन को 5-7 दिन घर में अलग कमरे में क्वारंटाइन रहने के निर्देश दिए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग की टीम उनकी निगरानी करेगी। स्थिति बिगड़ने पर उन्हें कोविड आइसोलेशन वार्ड में भर्ती किया जाएगा।

अब होगा सर्वे

टीकमगढ़ में कोरोना मरीज की पुष्टि होने के बाद स्वास्थ्य विभाग कॉलोनी में फीवर सर्वे करवाएगा। संदिग्ध मिलने पर उनकी जांच की जाएगी। साथ ही उमेश जैन के संपर्क में आए लोगों की सूची बनाकर उनकी भी जांच की जाएगी।

25 जून को ग्वालियर में एमपी कांग्रेस का सामूहिक उपवास

ग्वालियर में अंबेडकर मूर्ति विवाद बढ़ा

जीतू बोले-अंबेडकर की जगह राव को बताया जा रहा संविधान निर्माता

भोपाल (नप्र)। ग्वालियर में डॉ.भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को लेकर मचे विवाद के बीच अब कांग्रेस प्रदेश व्यापी चरणबद्ध आंदोलन करेगी। एमपी कांग्रेस 23 से 25 जून तक प्रदेश भर में इस मुद्दे पर जनजागरण अभियान चलाएगी। भोपाल स्थित प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, विधायक फूल सिंह बरैया ने इस मामले को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की।कांग्रेस की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने पलटवार करते हुए कहा-मैं पूछना चाहता हूं आपने किस आधार पर भाजपा और आरएसएस का नाम लिया? समाज में इस तरह से वातावरण बिगाड़ने का टेंडर लेने वाले दिग्विजय सिंह इस तरह के प्रयास करते रहे हैं।

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा, ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में बाबा साहब की मूर्ति नहीं लगने दी जा रही है। इसे लेकर कांग्रेस पार्टी 23 जून से 25 जून तक तीन दिनों का एक वैचारिक जनजागरण आंदोलन करने जा रही है। कांग्रेस पार्टी समाज के सभी वर्गों को यह बताएगी कि बाबा साहब ने जो संविधान बनाया उसमें सभी को अधिकार दिए गए हैं।

संविधान किसने लिखा- इस पर विवाद खड़ा किया जा रहा- कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने कहा, ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में बाबासाहेब की प्रतिमा को लेकर विवाद खड़ा किया जा रहा है। कोई संविधान प्रेमी ऐसी सोच अपने जीवन में नहीं रख सकता। लेकिन दुर्भाग्य है कि इस तरह का कृत्य एक सोच के लोग करवा रहे हैं। इस सोच के लोग शुरुआत में भी विवाद करवा चुके हैं। अब विवाद इस बात पर कराने की कोशिश हो रही है कि संविधान किसने लिखा? देश का हर नागरिक जानता है संविधान किसने लिखा। संविधान सभा की जो प्रोसिडिंग है, जो चर्चा हुई और उसमें किसका क्या योगदान है, वह सबको पता है। उसके बाद नया विवाद कैसे उत्पन्न किया जाए। उस मकसद से आरएसएस के नागपुर मुख्यालय से शुरू होकर आज यह विवाद आगे बढ़ता हुआ हम लोग देख रहे हैं। देश का सच्चा नागरिक होने के नाते। संविधान में पूरी आस्था रखने के नाते।

'अतुल्य मध्यप्रदेश' बना पर्यटकों की पहली पसंद

● वर्ष 2024 में पहुंचे 13 करोड़ 41 लाख सैलानी ● भारत के हृदय प्रदेश में पर्यटन ने बनाए नए रिकॉर्ड

भोपाल (नप्र)। पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। इसकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरें, प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीव संपदा का आकर्षण 'अतुलनीय मध्यप्रदेश' के रूप में पर्यटकों की पहली पसंद बन रहा है। प्रदेश ने वर्ष 2024 में पर्यटन के क्षेत्र में कीर्तिमान रचा है। मध्यप्रदेश में रिकॉर्ड 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन हुआ। यह उपलब्धि वर्ष 2023 की तुलना में 19.6 प्रतिशत, 2019 से लगभग 50.6 प्रतिशत और 2020 की तुलना में 526 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक संपदा, ऐतिहासिक धरोहरें और वन्यजीव विविधता, पर्यटकों को एक सम्पूर्ण अनुभव प्रदान करती हैं। वर्ष 2024 में 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन इस बात का प्रमाण है कि मध्यप्रदेश देश ही नहीं, वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर भी मजबूती से उभर रहा है। यह उपलब्धि शासन की दूरदर्शी नीतियों, आधारभूत ढांचे के विकास और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी का प्रतिफल है।

विदेशी पर्यटकों का आगमन- वर्ष 2024 में 1.67 लाख विदेशी पर्यटकों ने भी मध्यप्रदेश की सैर की। खजुराहो में 33 हजार 131, ग्वालियर में 10 हजार 823 और ओरछा में 13 हजार 960 विदेशी पर्यटक पहुंचे। शहरी पर्यटन में भी विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई, जिसमें इंदौर में 9,964 और भोपाल में 1,522 विदेशी पर्यटक शामिल हैं। बांधवगढ़ में 29 हजार 192, कान्हा में 19 हजार 148, पन्ना में 12 हजार 762 और पेंच में 11 हजार 272 विदेशी पर्यटक आए, जो मध्यप्रदेश की वैश्विक अपील को दर्शाता है।

धार्मिक पर्यटन - देश की आस्था का नया केंद्र- प्रदेश के धार्मिक स्थलों ने वर्ष 2024 में 10.7 करोड़ पर्यटकों को आकर्षित किया, जो वर्ष 2023 की तुलना में 21.9 प्रतिशत अधिक है। प्रदेश के शीर्ष 10 पर्यटन स्थलों में से 6 धार्मिक स्थल शामिल हैं। उज्जैन 7.32 करोड़ पर्यटकों के साथ इस सूची में सबसे आगे रहा, जो वर्ष 2023 के 5.28 करोड़ की तुलना में 39 प्रतिशत अधिक है।

चित्रकूट में भी 1 करोड़ से अधिक पर्यटक आए, जो वर्ष 2023 के 90 लाख की तुलना में 33 प्रतिशत अधिक है। मैहर में 1.33 करोड़, अमरकंटक में 40 लाख, सलकनपुर में 26 लाख और ओंकारेश्वर में 24 लाख पर्यटक पहुंचे। महाकाल लोक, ओंकारेश्वर महालोक, श्रीराम वनगमन पथ, देवी लोक, राजा राम लोक, हनुमान जैसी परियोजनाओं ने धार्मिक पर्यटन को आध्यात्मिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है।

आईएएस नियाज खान का अरब को लेकर विवादित ट्वीट

● एक्स पर लिखा, भारत को अरब नहीं बनने देंगे, अरब को यहां के मुसलमानों से लेना-देना नहीं

भोपाल (नप्र)। आईएएस अफसर और लोक निर्माण विभाग के उप सचिव नियाज खान ने अरब कंट्री को लेकर विवादित ट्वीट किया है। जिसमें कहा है कि अरब के लोगों को केवल धन से मतलब है यहां (भारत) के मुसलमानों से कुछ लेना देना नहीं है। भारत को अरब नहीं बनने दिया जाएगा। यहां की संस्कृति का सभी मुस्लिम भाई सम्मान करना सीखें। नॉवेल राइटर और हाल में अपना पहला नॉवेला लिखने वाले एमपी कैडर के आईएएस खान ने मंगलवार सुबह एक्स पर किए ट्वीट में कहा है कि भौतिक सुख और विलासिता में डूबे अरबी हमारे नहीं हैं। यहां के हिंदू हमारे हैं क्योंकि हम सब यहीं से निकले हैं। अरब के लोगों को केवल धन से मतलब है। यहां के मुसलमानों से कुछ लेना देना नहीं है। एक अन्य ट्वीट में खान ने लिखा है कि इस्लाम अरब के लोगों ने फैलाया और परिणाम भारत के तीन हिस्से हो गए। भविष्य में अरब संस्कृति को भारत में घुसने नहीं दिया जाएगा। अभी भी कहीं-कहीं अरब का लिबास, एक लंबा कपड़ा और सर पर रिंग लगा कपड़ा देखने को मिलता है।

संपादकीय

जाति जनगणना का आगाज

केन्द्र सरकार द्वारा भारत में जनगणना की अधिसूचना जारी किए जाने के बाद संदेह के बादल पूरी तरह छंट गए हैं कि जनगणना और वो भी जातीय आधार पर होगी या नहीं। निर्धारित कालावधि के हिसाब से यह जनगणना 2021 में ही होनी थी, लेकिन देश में कोरोना महामारी का प्रकोप होने से यह टलती गई। हालांकि विपक्षी कांग्रेस को इस बात पर भी आपत्ति है कि मोदी सरकार ने जातीय जनगणना के मुद्दे पर यू टर्न क्यों लिया। पहले वह इसके खिलाफ थी तो अब उसके समर्थन में क्यों है? यद्यपि इस विरोध में कोई दम नहीं है। बहरहाल सरकार ने 16 जून को जनगणना का पूरा कार्यक्रम घोषित कर दिया है। इसके मुताबिक पूरे देश में वर्ष साल 2027 में जातियों की गणना के साथ-साथ जनगणना को दो चरणों में होगी। देश के ज़्यादातर हिस्सों में जनगणना के लिए 1 मार्च 2027 की रात 12 बजे को आधार तारीख़ माना जाएगा। वहीं ठंडे और बर्फबारी वाले प्रदेशों में जनगणना की तारीख 1 अक्तूबर 2026 होगी। गौरतलब है कि देश में ये जनगणना 16 साल बाद होने जा रही है। इससे पहले 2011 में दो चरणों में जनगणना की गई थी। जनगणना किसी भी देश के लिए प्रामाणिक आंकड़ों को इकट्ठा करने का एक महत्वपूर्ण अभियान है। ये आंकड़े देश के विकास के लिए जरूरी होते हैं तथा वर्तमान आर्थिक सामाजिक परिस्थिति का आईना होते हैं। इसके तहत आबादी की आयु, लिंग, भाषा, धर्म, शिक्षा, व्यवसाय और निवास आदि को लेकर विस्तृत जानकारी जुटाई जाती है। इनका इस्तेमाल नीति बनाने और कल्याणकारी योजनाओं आदि के लिए किया जाता है। भारत में 1872 से जनगणना हो रही है। यह काम भारत के जनगणना अधिनियम 1948 के प्रावधानों के तहत किया जाता है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आने वाला ऑफ़िस ऑफ़ रजिस्ट्रार जनरल एंड सेंसस कमिश्नर जनगणना करवाता है। पिछली जनगणना 2011 में दो चरणों में की गई थी। केन्द्र सरकार ने इसके लिए बजट में 584 करोड़ रू. का प्रावधान किया है। जनगणना की 01 मार्च, 2027 को पूरी होगी। अभी तक जनगणना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से जुड़ी जानकारी होती थी। लेकिन इस बार की जनगणना में हर शख्स को अपनी जाति बताने का विकल्प दिया जाएगा, जिसे एक बड़े बदलाव के तौर पर देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि विपक्षी पार्टियों की ओर से लंबे समय से जातिगत जनगणना कराए जाने की मांग की जा रही थी। उसके चलते केन्द्र सरकार ने इसी साल अप्रैल जातिगत जनगणना कराने का ऐलान किया था। लेकिन विपक्ष को डर है कि उसकी मांग भले ही सरकार ने मान ली हो, लेकिन इसका राजनीतिक लाभ भाजपा के खाते में जा सकता है। क्योंकि इसकी टाइमिंग कुछ इसी तरह से है। वैसे भी जनगणना के आंकड़ों के आधार पर विधानमंडलों में सीटों का परिसीमन और 33 फीसदी महिला आरक्षण भी तय होगा। विपक्ष के भय को राहुल गांधी के उन बयानों से भी समझा जा सकता है, जिसमें उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया था कि मोदी सरकार सच्ची जनगणना नहीं कराएगी। जब जातीय जनगणना होने जा रही है तो इसमें सच्ची और झूठी का कोई अर्थ ही नहीं है। दरअसल विपक्ष की परेशानी यह है कि जाति जनगणना का जो मुद्दा उन्होंने लोकसभा चुनाव और बाद में कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में जोरदार तरीके से उठाकर सियासी लाभ लिया था, उसे अचानक मानकर इस मुद्दे का रिमोट कंट्रोल अपने हाथों में ले लिया है। भाजपा इस मुद्दे को अपने पक्ष में यह कहकर भुनाएगी कि जाति जनगणना तो हमने कराई, बाकी तो केवल बातें करते रहे। विपक्ष के पास इसका कोई तोड़ नहीं होगा।

चिंता कीजिए युद्धों से दुनिया कैसे बचेगी

नजरिया

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

आपके पड़ोस में युद्ध की स्थिति बनी हुई है फिर आप कब तक शांति के साथ बैठे रह सकते हैं । न चाहते हुए भी युद्ध की आग में झुलसने के लिए जाना पड़ता है । जो युद्ध ग्रस्त है और जो युद्ध में कहीं नहीं है दोनों ही जानते हैं कि युद्ध एक विनाशक अवस्था है । युद्ध से प्राप्त कुछ नहीं होना है । यह एक भ्रम बना रहता है कि हम युद्ध से शक्तिशाली बन जायेंगे या दुनिया की सारी शक्ति हमारे पास आ जायेगी । पर आप यदि धैर्य से सोचें तो एक बात कभी समझ में नहीं आती है कि युद्ध हम किस कीमत पर कर रहे हैं । हमने जो युद्ध शुरू किया है वह किसी एक बिंदु पर नहीं है न ही उसका कोई एक मैदान है या एक युद्ध क्षेत्र है, आज तो ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया ही युद्धाभ्यास में लगी हुई है और बर्चस्व की लड़ाई ऐसी चल रही है कि यहां कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं है पर इस युद्ध के साथ हम क्या पा रहे हैं इस पर शायद ही कोई विचार कर रहा है । युद्ध के जो दृश्य आ रहे हैं वे इतने भयानक हैं कि उनके बारे में सोचकर भी दिमाग खराब हो जाता है ।

युद्ध से कुछ भी हासिल नहीं होता पर सभ्यताओं के बीच टकराव की स्थिति बनी रहती है । अपने अस्तित्व को घोषित करने के क्रम में बहुत बार युद्ध लड़ा जाता है । युद्ध इसलिए नहीं होते कि युद्ध से किसी को कुछ मिलने वाला है बल्कि युद्ध एक ऐसी स्थिति में ला देते हैं कि न तो युद्ध को स्वीकार करते बनता है और न ही युद्ध से दूर हो जाने की ही स्थिति बनती है । बहुत बार आप चाहते नहीं हैं कि युद्ध हो पर सामने वाला टकराव की स्थिति पैदा कर रहा है । वह बार बार युद्ध के लिए उकसा रहा है, युद्ध की आग में स्वयं जल रहा है और औरों को भी जलाने के लिए युद्ध की घोषणा करता रहता है ।

आपके पड़ोस में युद्ध की स्थिति बनी हुई है फिर आप कब तक शांति के साथ बैठे रह सकते हैं । न चाहते हुए भी युद्ध की आग में झुलसने के लिए जाना पड़ता है । जो युद्ध ग्रस्त है और जो युद्ध में कहीं नहीं है दोनों ही जानते हैं कि युद्ध एक विनाशक अवस्था है । युद्ध से प्राप्त कुछ नहीं होना है । यह एक भ्रम बना रहता है कि हम युद्ध से शक्तिशाली बन जायेंगे या दुनिया की सारी शक्ति हमारे पास आ जायेगी । पर आप यदि धैर्य से सोचें तो एक बात कभी समझ में नहीं आती है कि युद्ध हम किस कीमत पर कर रहे हैं। हमने जो युद्ध शुरू किया है वह किसी एक बिंदु पर नहीं है न ही उसका कोई एक मैदान है या एक युद्ध क्षेत्र है, आज तो ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया ही युद्धाभ्यास में लगी हुई है और बर्चस्व की लड़ाई ऐसी चल रही है कि यहां कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं है पर इस युद्ध के साथ हम क्या पा रहे हैं इस पर शायद ही कोई विचार कर रहा है । युद्ध के जो दृश्य आ रहे हैं वे इतने भयानक हैं कि उनके बारे में सोचकर भी दिमाग खराब हो जाता है । आप सोचिये की बच्चे खाना खाने वाले हैं या खाने की पंक्ति में खड़े हैं और कहीं दूर से उन पर युद्धक विमानों से बम ब्लास्ट करा दिया जाता है । सारे बच्चे मारे जाते हैं ।

यह दृश्य किस विजेता को गर्व से भरेगा , बच्चों की चीख-पुकार सुनकर किसे आनंद आता है या किसकी युद्ध पिपासा शांत होती है, समझ से परे है और इस स्थिति को इस त्रासदी को दुनिया देख रही है। यह भी सच है कि आज परंपरागत युद्ध लड़े भी नहीं जा रहे हैं, जहां वीरता का भाव, जहां युद्ध कौशल का परिचय दिया जा रहा हो आज तो सारी लड़ाई तकनीकी दक्षता की और तकनीक के माध्यम से दुनिया में अपना बर्चस्व बनाने की होड़ में लड़ाई लड़ी जा रही है। आज बहादुरी का प्रदर्शन नहीं हो रहा है जो युद्ध है वह तकनीक का है, बारूद का है, मिशाइल का है और एक जगह से बैठे बैठे दूर कहीं पर टारगेट फिक्स कर कैसी भी तबाही मचाई जा सकती है और तबाही मचाई जा रही है । दुनिया भर में युद्धों की गूंज है वह मन मस्तिष्क पर बहुत घातक प्रभाव डाल रही है । हम सब भयानक दृश्यों के साक्षी बन रहे हैं...कहीं भी कहीं से आकर आग का गोला गिर सकता है । दुनिया इस समय रूस युक्रेन, इजरायल और ईरान के बीच युद्ध देख रही है । आज युद्ध केवल युद्ध के मैदान पर नहीं लड़े जा रहे हैं या जो टारगेट है वहीं पर लड़ा जा रहा हो, इससे आगे एक युद्ध निरंतर टीवी चैनल पर लड़ा जा रहा है । दिन रात मस्तिष्क पर चैनलों द्वारा युद्ध चलाया जा रहा है । यह बहुत पीड़ादायक है पर चल रहा है । इन दृश्यों से जितना दूर रहेंगे उतनी ही शांति मिलेगी । एक तरफ से शांति की बातें उठती हैं और दूसरी तरफ से युद्धक विमानों द्वारा बम ब्लास्ट किया जा रहा होता है । कहां कब किस स्थिति में ब्लास्ट हो जाये कह नहीं सकते । हमें यह चिंता करने की जरूरत है कि युद्धों से दुनिया कैसे बचेगी? आने वाली पीढ़ियों को हम क्या सौंप कर जायेंगे ? यहीं कि जब युद्ध हो रहे थे तो हम सब बस दर्शक भर थे । हमारी मौन उपस्थिति कुछ करें या न करें पर निश्चित ही युद्ध के विचार को बढ़ावा देने का काम करती है । आज वह समय आ गया है कि जब पूरी दुनिया की वैश्विक शक्तियों को प्रभावी ढ़ंग से शांति का प्रस्ताव और शांति पाठ करने की जरूरत है ।

यदि दुनिया भर में खुशहाली और मानवीय संसाधनों का रचनात्मक उपयोग हम करना चाहते हैं तो हमें युद्ध के विरुद्ध का घोषणापत्र जारी करना होगा। यह सभी को पता है कि युद्ध से कुछ होने वाला नहीं है । अंत में सभी युद्ध की निरर्थकता के ही गीत गायेंगे। उससे क्या होगा ? राख और बंजर हो रही भूमि से शांति के गीत गाने का क्या फायदा ? सही बात और संदर्भ तो यह है कि युद्ध को युद्ध शुरु होने से पहले रोक दें या युद्ध के बीच में युद्ध को रोक दें । हमें मानव शक्ति और मानव संसाधनों की इज्जत करना सीखना होगा । इसी आधार पर हम सब एक वैश्विक शांति के नागरिक धर्म को निभा पाने में सफल हो पायेंगे । युद्ध क्षेत्रों से दिन रात आग के गोले और धुआं उठ रहा है और यह बता रहा है कि दुनिया में अब उम्मीद के फूल खिलाने वाले लोग पता नहीं कहां चलें गये हैं । चारों तरफ़ सन्नाटा पसरा है और मानवीय चेतना की जो आवाजें थी वो बंद हो गई हैं । ऐसे में युद्ध भी भला कहां से युद्ध कहला पायेगा । आज युद्ध तो एक तरह से बस विनाशकारी दशा को व्यक्त कर रहा है । चारों तरफ युद्ध के सामान बेचे जा रहे हैं और हर युद्ध उत्पादक देश इस फिराक में लगा है कि कैसे वह युद्ध सामग्री दुनिया भर में बेच सकें ।

युद्ध भी एक तरह से पूरा व्यापार और बाजार बन गया है इसीलिए एक न एक युद्ध चलता रहे वह भले शांति स्थापन के नाम पर हो या किसी और नाम पर या युद्ध की सामान्य फिलासफी पर कि हमें अपनी सीमाओं का विस्तार करना है । इतना काफी है युद्ध करने के लिए । जो युद्ध में शामिल देश हैं उन्हें पता है कि दोनों ही तरफ से आम जन को निशाना बनाया जा रहा है । युद्ध में आम आदमी मारे जा रहे हैं, बच्चे स्त्री पुरुष बुजुर्ग जो भी मारे जा रहे हैं वे एक वैश्विक नागरिक हैं और इस रूप में वे विश्व की धरोहर हैं । यदि मनुष्य मात्र को हम वैश्विक संसाधन के रूप में देखते हैं तो ऐसा मानने में कोई हर्ज नहीं है । जो? संस्थाएं वैश्विक स्तर पर शांति के लिए काम करती हैं उन्हें निरंतर इस बात की निगरानी करनी चाहिए कि ये युद्ध जो हो रहे हैं तो क्यों हो रहे हैं और इन युद्धों का अंत किस बिंदु पर जाकर होगा । कहां पर सब मिलकर यह मांग करेंगे कि अब हमें दुनिया को युद्ध मुक्त बनाने के लिए काम करना है । लोगों को नये सिरे से शिक्षित करने की जरूरत है कि समस्या का समाधान बातचीत, आपसी सहयोग, सहमति और सौहार्द से हो सकता है । हमें हर हाल में युद्ध को खत्म करने के लिए काम करना होगा न कि युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए मौन होकर संसार में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी है । हमें मानव शक्ति और मानव संसाधनों की इज्जत करना सीखना होगा । इसी आधार पर हम सब एक वैश्विक शांति के नागरिक धर्म को निभा पाने में सफल हो पायेंगे।

पीएम मोदी की साइप्रस यात्रा के मायने

विश्व राजनीति

चेतनादित्य आलोक

लेखक स्तंभकार हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साइप्रस, कनाडा और क्रोएशिया की अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण यात्रा के पहले चरण में यूरोपीय संघ के सदस्य देश साइप्रस पहुंचे, जो भारत का पुराना मित्र भी है। राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडुलाइड्स ने हवाई अड्डे पर पहुंचकर उनका जोरदार स्वागत किया। बाद में, उन्होंने पीएम मोदी को वहां के सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत भी किया, जो भारत और साइप्रस के प्रगाढ़ होते संबंधों को दर्शाता है। पीएम मोदी की तीन देशों की इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य भारत के वैश्विक संबंधों को मजबूत करना, आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना तथा वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की प्राथमिकताओं को लेकर कूटनीतिक प्रयासों को और तेज करना है। देखा जाए तो उपर्युक्त तीन देशों में भी साइप्रस का भारत के लिए अत्यंत विशेष महत्व है। हालांकि, अब तक हमने इस ओर कम ही ध्यान दिया है। तभी तो, लगभग 22 वर्षों के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने साइप्रस का आधिकारिक दौरा किया है। इससे पहले 1983 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने और 2002 में प्रधानमंत्री रहते अटल बिहारी वाजपेयी ने रिपब्लिक ऑफ साइप्रस की आधिकारिक यात्रा की थी। बहरहाल, पीएम मोदी के साइप्रस दौरे से दोनों देशों के संबंधों में आई मधुरता, एकजुटता और आपसी सहयोग की भावना आने वाले समय में तुर्कीए की नींद हराम करने वाली साबित होगी, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

दरअसल, पीएम मोदी के इस दौरे का उद्देश्य केवल भारत और साइप्रस के बीच मित्रता को बढ़ाना नहीं, बल्कि भारत के खिलाफ विशेषकर कश्मीर के मुद्दे पर खुलकर बोलते रहने वाले एवं पाकिस्तान को सैन्य तथा कूटनीतिक समर्थन और सहयोग प्रदान करते रहने वाले साइप्रस के पड़ोसी तुर्कीए को सख्त संदेश देना भी है कि भारत उसकी हरकतों का जवाब देना अच्छी तरह से जानता है। वहीं, भारत का साइप्रस के साथ खड़े होना तुर्कीए के लिए साफ संदेश है कि भारत उसके खिलाफ उन देशों का समर्थन कर करता रहेगा, जो तुर्कीए की आक्रामकता से परेशान हैं। तात्पर्य यह कि भारत ने तुर्कीए की दुखती रग पर हाथ रख दिया है। साथ ही, पीएम मोदी की इस यात्रा से यह उम्मीद भी जगी है कि यह दोनों देशों के बीच की मित्रता को और प्रगाढ़ करने के अलावा आपसी व्यापार, संस्कृति एवं रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने में भी प्रभावी साबित होगा। यह उम्मीद निराधार भी नहीं है, क्योंकि साइप्रस की भौगोलिक स्थिति इसे भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण बनाती है। बता दें कि यह भूमध्य सागर में तुर्कीए के दक्षिण में, लेवांत (सीरिया-लेबनान-फिलिस्तीन-इजरायल) के पश्चिम में और स्वेज नहर के निकट स्थित है। यानी साइप्रस यूरोप, एशिया और अफ्रीका के बीच एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो भारत-मध्य-पूर्व-यूरोप कॉरिडोर (आइएमईसी) के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकता है।

आइएमईसी एक ऐसा व्यापारिक कॉरिडोर अथवा रास्ता है, जो भारत को मध्य-पूर्व के रास्ते यूरोप से जोड़ सकता है। यदि साइप्रस को इस कॉरिडोर में शामिल कर लिया जाए तो न केवल व्यापारिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने, बल्कि तुर्कीए की अनपेक्षित हेकड़ी को बंद करने में भी सफलता मिल सकती है। दरअसल, इसी उद्देश्य से भारत ने हाल के वर्षों में तुर्कीए के तमाम विरोधी देशों, जिनमें ग्रीस, आर्मेनिया, मिस्र और साइप्रस के साथ अपने संबंधों को मजबूती प्रदान करने के प्रयास किए हैं। इस क्रम में ग्रीस, आर्मेनिया, और मिस्र के साथ मित्रता एवं व्यापारिक तथा सामरिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से पीएम मोदी उन देशों के दौरे पहले ही कर चुके हैं। अब, उनकी यह साइप्रस यात्रा तुर्कीए को चारों तरफ से घेरने के भारत के रणनीतिक अभियान का ही एक हिस्सा प्रतीत होती है। वैसे, भारत के लिए साइप्रस की मित्रता हमेशा से बेहद महत्वपूर्ण रही है। बता दें कि संकट काल में साइप्रस ने हमेशा भारत का साथ दिया है, चाहे 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण के बाद का समय हो, जब हम दुनिया में अलग-थलग पड़ने लगे थे या 2008 में भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के समय अथवा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए वैश्विक समर्थन जुटाने का मामला हो। इसके अतिरिक्त, आतंकवाद और कश्मीर जैसे मुद्दों पर भी साइप्रस ने पाकिस्तान या तुर्कीए के बजाए हमेशा भारत का साथ दिया है।

वहीं, भारत भी हमेशा से साइप्रस की एकता और अखंडता का समर्थन करता रहा है, बल्कि भारत की तो यह मांग रही है कि साइप्रस का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र के नियमों और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अंतर्गत हल किया जाए। बता दें कि साइप्रस और तुर्कीए का संघर्ष 1974 से ही चला आ रहा है, जब ग्रीस के समर्थन से साइप्रस में तख्तापलट हुआ था, ताकि साइप्रस को ग्रीस के साथ मिलाया जा सके। यही वह समय था, जब तुर्कीए ने साइप्रस के उत्तरी हिस्से पर हमला कर उसे अपने कब्जे में ले लिया था, जिसके बाद से ही साइप्रस दो भागों में बंटा हुआ है। साइप्रस का दक्षिणी भाग 'ग्रीक साइप्रियट्स' अथवा 'रिपब्लिक ऑफ साइप्रस' कहलाता है, जिसे विश्व भर के देशों से मान्यता मिली हुई है। वहीं, इसका उत्तरी भाग 'तुर्की साइप्रियट्स' के नाम से जाना जाता है। इसे तुर्कीए ने 'तुर्की रिपब्लिक ऑफ नॉर्दर्न साइप्रस' घोषित किया हुआ है, लेकिन इसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त नहीं है। तुर्कीए ने उत्तरी साइप्रस में अपनी सेना तैनात कर रखी है और समय-समय पर वहां की समुद्री सीमाओं पर भी अतिक्रमण करने का प्रयास करता रहता है। गौरतलब है कि साइप्रस की धरती में 12-15 ट्रिलियन क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस का भंडार मौजूद है, जिस पर तुर्कीए कब्जा करना चाहता है। इतना ही नहीं, तुर्कीए के हस्तक्षेप के कारण साइप्रस को अपनी ही गैस को निर्यात करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

यहां तक कि तुर्कीए साइप्रस के समुद्री क्षेत्र में अपने जहाज भेजकर गैस खोजने की कोशिशें भी कर चुका है, जिससे साइप्रस, ग्रीस और यूरोपीय संघ के साथ उसका तनाव बढ़ने की खबरें भी आती रही हैं। दरअसल, तुर्कीए का मानना है कि साइप्रस जैसे छोटे-से द्वीप को इतना बड़ा समुद्री क्षेत्र (ईईजेड) नहीं मिलना चाहिए। तुर्कीए के ये तमाम प्रयास ईईजेड से संबद्ध अंतरराष्ट्रीय कानूनों के खिलाफ हैं। जाहिर है कि यदि भारत साइप्रस के साथ संस्कृति, ऊर्जा, व्यापार या बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाता है, तो यह तुर्कीए के लिए बहुत बड़ा झटका साबित हो सकता है। वहीं, तुर्कीए की चतुर्दिक घेराबंदी और साइप्रस के साथ बढ़ते सहयोग एवं घनिष्ठता भारत की बढ़ती वैश्विक शक्ति एवं क्षमता का प्रतीक है। (इतिश्री)

बदलते रिश्तों के पीछे छिपी सामाजिक साज़िश

अभिव्यक्ति

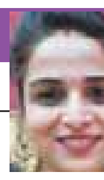

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

आज जिस भी समाचार-पत्र को खोलें तो कुछ रिश्तों का वीभत्स चेहरा देखने को मिलता है। कई बार तो विश्वास नहीं होता कि क्या सच में सामाजिक मूल्यों में इतनी गिरावट आ चुकी है? हमारे पूर्वजों ने जिस परिवार को रिश्तों की पक्की डोर से बाँधने के लिए समर्पण को सबसे महत्वपूर्ण माना। आज उसका अर्थ भी हम भूलते जा रहे है। प्रश्न यह है कि ऐसा हो क्यों रहा है? क्या हमारी आज की परिवार व्यवस्था में कमी है या इसके पीछे छिपे गहरे अर्थो को समझने में हम असमर्थ हो रहे है।

हम जितने व्यापक स्तर पर तकनीक से जुड़ रहे है उतना ही इस तकनीक से हो रहे कुप्रभावों से अभी भी अनजान है। यहाँ मैं यह नहीं कहना चाहती कि शिलांग या मेरठ की खबरें हमारे लिए दस्तक नहीं है? एक ऐसे समाज की जहां शादी करने से पहले सौ बार सोचना पड़ेगा। परन्तु क्या ऐसी खबरों को माध्यम बनाकर पूरी विवाह-पद्दति पर प्रश्नचिह्न लगाना न्याययुक्त है? आखिर, कुछ खबरों को माध्यम बनाकर समाज में विवाह एवमं परिवारवाद को निशाना क्यों बनाया जा रहा है? किसी परिवार के एक सदस्य के कुछ गलत करने से पूरा परिवार ही आशंकाओं के घेरे में क्यों आ जाता है?

पुरातनकाल से चली आ रही संयुक्त परिवार की प्रथा पर हम कैसे प्रश्नचिह्न लगा सकते है? ऐसे बहुत से प्रश्न है जिनका उत्तर यदि नहीं खोजा गया,तब हमारी ही संस्कृति के हम स्वयं ही भक्षक बन जाएंगे। संयुक्त परिवार के आस्तित्व पर प्रहार एक दम से नहीं हुआ है, बल्कि क्रमवार हमारी स्मृतियों में संयुक्त परिवार के नुक्सान को भरा गया है। सबसे पहले स्त्री की आज़ादी को, फिर छोटे शहरों में कमाई के कम साधन होने को फिर अपनी तरक्की के नाम बड़े शहरों में जाने के बाद अपने गाँव को ही भुला देने की होड़ सी ला दी गई, और इस सब कुव्यवस्था को समाज में एक सुनियोजित ढंग के साथ फैलाने में मीडिया एवमं फिल्मो का एक अहम रोल रहा है। युवाओं के साथ-साथ घरेलू स्त्रियों के मन में ऐसे किरदारों को बिठाया गया जो स्वयं की उन्नति के साथ विद्रोही स्वभाव को अपने भीतर समेटे हुए थे।पूर्व फिल्मों में हीरो को विनम्र और समर्पित दिखाकर समाज को सकारात्मक संदेश दिया जाता था। आज फिल्मों में उन्ही खूबियों को रखने वाले किरदारों को मजाकिया एवम एक जोकर के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा।अब जब हमारे जीवन पर फिल्मों का गहरा प्रभाव रहता है, तब हम यह कैसे सोच सकते है कि हमारी सोच पर इनका प्रभाव नहीं पड़ेगा? हम सो काल्ड प्रैक्टिकल होने लगे है।

अपने मनोभावों को अपने परिवार से अधिक दूसरे लोगों से बांटने लगे है। इसका दुष्परिणाम हमारे सामने है। पूजा-पाठ कम होने लगा है और हमारे जीवन के हर विशेष दिन को पार्टी करने में व्यतीत करने लगे है। पार्टी करना कतई गलत नहीं है,लेकिन अधिकतर पार्टियों में हमारे परिवार का न होना चिंताजनक है।परिवार से दूरी आने वाली दुर्घटनाओं का संकेत है। परन्तु विचार योग्य यह भी बात है कि परिवार को जोड़ने की ज़िम्मेदारी मात्र घर के बच्चों की नहीं है, कुछ घर के बड़े अपनी ही निम्न सोच के चलते घर को तोड़ते है और आरोप नए युवाओं पर लगाकर अपने ही घर के टूटने का तमाशा देखते है। उनको इस बात का आभास ही नहीं होता की उनकी कुंठित सोच के रहते मात्र एक परिवार नहीं टूटता अपितु समाज का एक निर्माण करने वाली आगामी पीढी त्रासदी को झेलती है। और इस सबका लाभ समाज के साथ-साथ देश के विकास पर भी पड़ता है।

जब तक हम जुड़कर रहते है, तब हम आर्थिक रूप से भी मजबूती प्राप्त कर सकते है। हमें आर्थिक सलाह देने वाले हमारे ही परिवार के बड़े अपनी सूझ-बूझ से विदेशों में बसे अपने बच्चो के पैसों को अपने पास जमा करने के छोटे से कदम से वह देश की अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव डालते है।हमारा जुड़कर रहना कुछ लोगों को पसंद नहीं आता, इसलिए किसी न किसी समाचार को रिश्तों से जोडकर उसमें हमारे पारिवारिक मूल्यों को खत्म करने की सलाह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दी जाती है। जिसका सीधा असर हमारी सोच पर पड़ता है।

आजकल के सिनेमा में भी स्त्रियों को आज़ादी के नाम पर परिवार से बगावत करने को अच्छाई के रूप में दिखाया जाता है। लिव-इन, शादी के बाहर प्रेम कई बार बिना किसी को जाने वन-नाईट स्टैंड को स्त्री की आज़ादी से जोड़कर दिखाया जाता है। यह किस और हम अपने लोगों को धकेल रहे है? यह विचार करने योग्य है। जब हम जुड़ेंगे ही नहीं या नए रिश्तों में जुड़ना ही नहीं चाहेंगे तब समाज क्या वैसा ही रहेगा जैसा आज है,तब गलती किसकी होगी? भटकाने वालों की या भटकने वालों की? हर सवाल बहुत सारे उत्तर मांगता है। बस वही उत्तर दीजिए जिसे आप अपनी आगामी पीढी से सांझा कर सकें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आईए घर फूंक कर तमाशा देखते हैं

व्यंग्य

महेश कुमार केशरी

लेखक व्यंग्यकार हैं

अजीब आलम है। आप पहचान नहीं पाएँगे। अपने दोस्त और दुश्मनों को। जो दोस्त हैं, वो खंजर भोंकने के लिए हमेशा से तैयार हैं। अपनों के बीच के ऐसे लोगों को पहचानना बड़ा मुश्किल है। दरअसल उन्होनें मुखौटे पहन रखे हैं। अच्छा होने का। ऐसे लोगों की पहचान मौके - बेमौके हो ही जाती है। आपको क्या लगता है। बिस्तर से उठना और बिस्तर और वापस लौटना एक कवायद भर है। और जो एक- एक दिन कट रहा है। वो इतनी आसानी से कट जाता है। दरअसल बिस्तर से उठना और वापस बिस्तर पर लेटना एक लँबी जद्दोजहद से भरा काम है। बिस्तर से उठते ही अंक गणित का खेल शूरू हो जाता है।

ये एक ऐसा गणित है, कि आर्यभट्ट और रामानुज को भी आजतक समझ में नहीं आया। उठते ही आदमी जरूरतों के पीछे भागने लगता है। जरूरतें हैं कि पूरी ही नहीं पड़ती। ये गृहस्थी का गणित है। जिसे कोई गृहस्थ आज तक नहीं समझ पाया। आपके घर में ही आपको ऐसे लोग मिल जाएँगे। जो खा तो आपका रहे हैं, लेकिन आपकी ही पीठ में छुरा घोंप रहे हैं। आप किसका नाम लीजियेगा। कोई हितैषी नहीं है। सब मार-मार कर बचाने में लगे हैं। सबको जमा करना है।आपका ही खाते हैं। और आपको ही आँख दिखाते हैं। आप लोक -मर्यादा में कुछ नही कहते।

सोचते हैं , कि लोग क्या कहेंगे। लोग कहेंगें, कि आप कुटुँब धर्म का निर्वहन ठीक से नहीं करेंगे। लोग को तो बात करने का विषय चाहिए। ऐसे विषय जिसमें रस हो। जो दूसरों के घरों से जुड़ा हो। जिसका बखान वे लोग रस ले लेकर करें। और आपके गोतिया- देयाद अंत में आपको ही चोर ठहरा देते हैं। अरे गोतिया देयाद की छोड़िये।आपको पालने वाले आपके पालनहार भी आपको ही अंत में गलत ठहरा देंगे। आप भलाई करते जाईए। आप ही अंत में चोर ठहराए जाएँगे। आपने ही सारा धन मार - मारकर अपने नाम से रख लिया है। और जो आप कर्ज लेकर इधर - उधर से माँग - छाँगकर खा- खिला रहे थे। सब मिट्टी हुआ जाता है। आप सब हैं, चोर बेईमान। ये आपके अच्छे होने का ही नतीजा है, कि लोग आपको इतना करने के बाद भी बुरा - भला कहने का अधिकार रखते हैं। ये लोग आपकी उदारता का फायदा उठाना अच्छे से जानते हैं।

उनको आपके कटुँब से कोई लेना -देना नहीं है। आप भींगते रहिए दुख , मुसीबत और परेशानी की चटख धूप में।उनको केवल अपना हिस्सा चाहिये। माँ-बाप की जिम्मेवारी के नाम पर कुछ नहीं। ना खाना-पीना पूछना। ना ही दर -दवाई, देंगे। सब आपको खुद समझना है। वो अंतिम समय में आएँगे। जिस समय हिस्से और बखरे की बात होगी। आप खड़े रहिए जिममेदारी का बोझ उठाए। कुटुँब के बड़ों ने आपको पाला-पोसा, आपको बड़ा किया। उस एहसान को लोग भूल जाते हैं। अपने परिवार और बच्चों के लिए चीजें छुप-छुपाकर ले जायी जाती हैं। आप शुरू से मरे जा रहें। हाय रे मेरा कुटुँब, मेरे लोग !इसके लिए ये कर दूँ। उसके लिए वो कर दूँ। अंत में आदमी अपनों से हार जाता है। क्या करे और क्यों करे? जब आप हमारा ही खाईयेगा। और हमें ही आँख दिखाईयेगा। और ऊपर से भीतर से भीतरघात भी कीजियेगा। आपको खाने के लिए भी चाहिये। और जमा करने के लिए भी। आप से कोई हिसाब ना माँगे। कोई कुछ ना कहे। तो बहुत बढ़िया। यदि कोई पूछ ले, कि अमुक चीज इतने की आती है। आपने इतना क्या किया। तो आप सबसे खरब। मुझसे हिसाब लोगे। लोग आपकी पत्नी को भी भड़काते हैं। अपने लिए भी कुछ जमा करके रखना। फलाना ऐसा कह रहा था, कि हम ये , ये चीज नहीं दे सकते। भाई तुम भी पैसा रखना। हो सके जब तुम्हारी उम्र हो जाए, तो शायद तमको भी तुम्हारा पति नहीं पूछे। अरे भाई ये अलगाव वाद की चिंगारी काहे भड़का रहे हो। मुझे लगता है , कि ये संयुक्त परिवार की अवधारणा धीरे -धीरे खत्म हो रही है। उसका कारण यही भीतरघात है। आप जिसको खिला - पिला रहें हैं। जिसके दवा-दारू की व्यवस्था कर रहें हैं। जिसके लिये आप जीवण में इतना भाग दौड़ कर रहें हैं। जिसके चलते आपने एक दिन की छुट्टी तक नहीं ली। आप घिस गए। मर गए देते -देते। लेकिन आखिर में आप ही सबसे बेकार साबित होईएगा। लिख लीजिए। जब तक आप दे रहें हैं। तब तक आप ठीक हैं। जहाँ आप देना बँद कर दीजियेगा। आप दुनिया के सबसे खराब इंसान माने जाएँगे। यही सत्य है । ये कुटुँब जो है , गिद्ध की तरह है। आपको केवल नोंचना जानता है। आप अपने शरीर का सारा गोश्त नुचवा लीजिए। कुटुँब खुश रहेगा। इसके बाद यदि आप अपने जीवण के आखिरी पाँच-दस साल कहीं शाँति से जीना चाहते हैं। और कहीं कुछ अपना खोलना या कुछ नया करना चाहते हैं। तो आप चोर हैं। आप कुटुँब के पीछे घिस जाईये। मर जाईये, खप जाईए। कोई कुछ ना कहेगा। सब लोग आपके मरने -खपने के इंतजार में हैं ज आपने कर्जा -महाजन करके, किसी से उधार पैंचा करके सबके लिए जीने के साधन जुटाईए। उसको खिलाईए - पिलाईए पढ़ाईए - लिखाईए। लेकिन अंत समय में आप अकेले बच जाते हैं।

हमारी रगों में संचारित होता है महारानी लक्ष्मीबाई का रक्त

बलिदान दिवस विशेष

अमित राव पवार

युवा साहित्यकार

संपूर्ण विश्व में सबसे संपन्न भारत देश जिसे सोने की चिड़िया कहा गया,इस पर वर्षों तक अनेकों बार विदेशी आक्रांताओं द्वारा आक्रमण हुए, जी भर के नोचा गया, लूटा गया। भारत पर हुकूमत की गई पर यहां की संतानों की रंगो में अपनी मातृभूमि का प्रेम कम न हुआ और ऐसे राष्ट्रीय पर बलिदान दे देने वालों की कहानियां भी कम नहीं है। 200 सालों का ब्रिटिश संघर्ष हो या भारत देश के स्वतंत्रता आंदोलन की बात,अपनी मातृभूमि के लिए असंख्य लोगों ने प्राणों की आहुतियां दी। तब जाकर वर्तमान दौर में हम सुखद सांस ले पा रहे हैं। वे भी क्या विशेष व्यक्तित्व रहे होगे,जिन्हें हम हजारों वर्षों बाद भी अपना प्रेरणास्त्रोत मानते है। इन्ही में से एक झाँसी की महारानी,जो इतिहास में झाँसी की रानी विख्यात है,जिन्हें हम सैकड़ो वर्षो बाद भी स्मरण कर रहे। भारतीय वीरांगनाओं में जो अपना विशेष स्थान रखती हैं। सन् 1857 स्वतंत्रता का भारतीय इतिहास इनके नाम के बिना अधूरा है। इनका जीवन समस्त विश्व की महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत के रूप में दिखाई देता है। जिन्होंने बखूबी नारी के समस्त कर्तव्यों का निर्वाह जीवन पर्यंत किया। एक और जहां इन्होंने स्वयं के माता-पिता का नाम रोशन किया। वहीं विवाह उपरांत पारिवारिक,सामाजिक एवं राजनीतिक दायित्वों को बड़ी कुशलता से निर्वहन किया,जो नारी का आदर्श रूप है। एक ओर जहां वे विदुषी महिला के रूप में हमें दिखाई देती है,वहीं दूसरी तरफ ममतामयी व वीर स्त्री के रूप में हमें दिखती हैं।

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 को वाराणसी में मराठी परिवार में मोरोपंत तांबे और भागीरथी बाई के यहां ऐसी कन्या का जन्म हुआ जो भारतीय इतिहास में सदा के लिए अमिट छाप छोड़ गई। जिन्हें 'मणिकर्णिका' के नाम से बाल्यकाल में जाना जाता था। लेकिन वे अपने माता-पिता के लिए 'मनु' थी। इनका 14 वर्ष की उम्र में झाँसी के राजा गंगाधर राव से विवाह होकर इन्हें एक नया नाम लक्ष्मीबाई दिया। किसी को क्या पता था कि यह नाम भारतीय इतिहास में अलग स्थान प्राप्त करेगा। जब 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ, रानी लक्ष्मीबाई ने भारत भूमि और झाँसी की रक्षा के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। इनका सम्पूर्ण जीवन मात्र 30 वर्ष का रहा। जिसमें से 14 वर्ष बचपन के निकालकर देखें तो 16 वर्ष तक 'झाँसी की महारानी' के रूप में जनसेवा करी। अपनी झाँसी और जनसमुदाय को ब्रिटिश अत्याचारों से बचाने के लिए कड़ा संघर्ष करते हुए 18 जून 1858 को ग्वालियर में मातृभूमि के चरणों में अपने प्राण आहुत कर दिए। छोटे से जीवनकाल में आने वाले संघर्षों का सामना करते हुए एक आदर्श स्थापित करना बहुत विलक्षण कार्य होता है। जो कि झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने किया। माँ दुर्गा के नौ स्वरूप की झलक हमें महारानी लक्ष्मीबाई में देखने को मिलती हैं। जिनका उन्होंने अपने जीवन में समय-समय पर प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सदियों तक अमर रहेगा और भविष्य में आने वाले पीढ़ी के लिए प्रेरणादाई रहेगा।

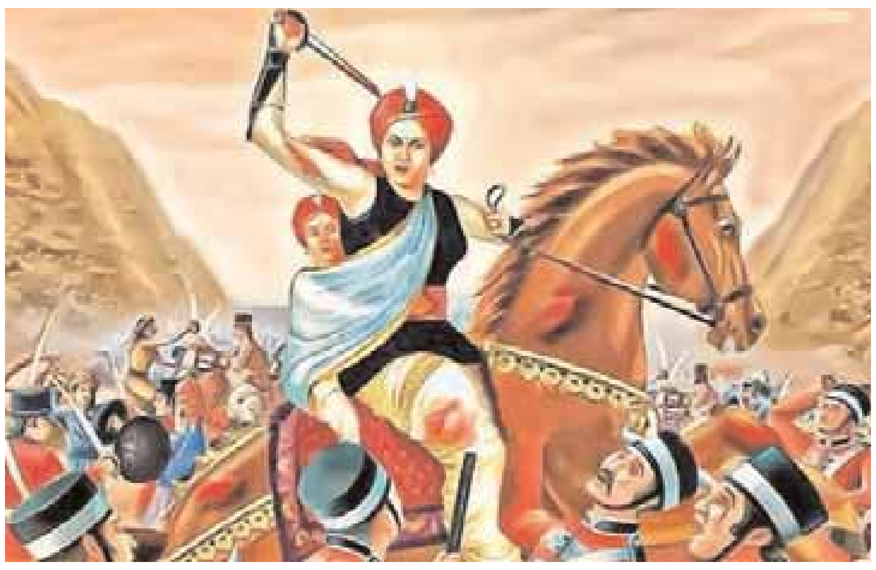

वह क्या ईश्वरीय साहस होगा,जब रणक्षेत्र में अपनी मातृभूमि के लिए अपने नन्हें पुत्र को पीठ पर बांधकर माँ काली के रूप में झाँसी की रानी ने युद्ध किया एक स्त्री का माँ के रूप में इससे बड़ा साहस क्या हो सकता है? सबसे मजबूत स्त्री सशक्तिकरण का उदा. महारानी लक्ष्मी बाई ही है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वयं की झाँसी को समर्पित कर दिया। मानो उन्ही से प्रेरणा लेकर आज अनेकों महिलाएं अपना जीवन यापन कर देश,समाज की सेवा में तत्पर है। इसका साक्षात उदा. ऑपरेशन सिंदूर की दो महिलाएं कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह हैं। जिन्होंने आतंकवादियों के विरुद्ध ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रतीक सिंदूर का पूरे विश्व मे मान बढ़ाया।

आतंकवादियों को बता दिया कि हमारी रगों में महारानी लक्ष्मीबाई का रक्त संचारित होता है। जिन्होंने शत्रु देश में घुसकर कुछ ही क्षण में अपने चातुर्य से धूल चटा दी। पूरे विश्व के समक्ष एक संकेत प्रस्तुत किया है कि भारतीय नारी शक्ति अगर चाहे तो किसी भी परिस्थिति में,किसी भी युग मे अपने स्त्रीत्व के गौरव को स्थापित कर सकती है।

देश के विरूद्ध खड़े दुश्मनों का नाश कर ऑपरेशन सिंदूर ने पूरी दुनिया को आईना दिखा दिया कि भारतीय महिलाएं समय आने पर भारतभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने का सामर्थ्य भी रखती है। किंतु जब से भारत के लोगों पर भाषा संस्कृति का प्रभाव पड़ा तब से हर क्षेत्र में हमें गिरावट दिखाई दे रही है। समसामयिक दौर में युवा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते हुए अपने चरित्र का हनन कर रहें हैं। अपवाद स्वरूप खबर भी सामने आई कि भारतीय संस्कृति के सबसे पवित्र व अहम विवाह संस्कार का निरादर कर रहे हैं। हाल ही में इंदौर जैसे महानगर में सामाजिक परिवेश में रहने वाली महिला सोनम रघुवंशी विवाह जैसे पवित्र बंधन में बनने के बाद स्वयं की व्यूहरचना ने अपने पति को ही मौत के घाट उतार दिया। ऐसे कई अप्राकृतिक कृत्य हमें अब तेजी से देखने को मिल रहे हैं। आवश्यकता है कि हम समस्त भारतीयों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराया जाए तथा आने वाली पीढ़ियों को झाँसी की रानी जैसी राष्ट्रीय नायिका के इतिहास से अवगत कराएं। जिससे कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। महारानी लक्ष्मीबाई को आज भी भारत की एक वीरांगना के रूप में याद किया जाता है क्योंकि वे नारी शक्ति का महान प्रतीक हैं।

इज़राइल-ईरान संघर्ष और भारत की भूमिका

सामयिक

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

पश्चिम एशिया की राजनीति सदैव से ही धार्मिक-सांप्रदायिक तनाव, वैचारिक टकराव और भू-रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र रही है। इज़राइल और ईरान का टकराव केवल दो देशों के बीच का सैन्य संघर्ष नहीं है, बल्कि यह एक गहन वैचारिक युद्ध है जिसमें परमाणु हथियारों की होड़, क्षेत्रीय प्रभुत्व की स्पर्धा और धर्म-आधारित कूटनीति की गूंज सुनाई देती है। भारत इस जटिल भू-दृश्य में अब पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर मल्टी-अलाइनमेंट की रणनीति के तहत एक परिपक्व और संतुलित रणनीतिक हस्तक्षेपकर्ता की भूमिका में उभर रहा है।

1. संघर्ष का मूल स्वभावः वैचारिक युद्ध बनाम सामरिक प्रतिस्पर्धा इज़राइल-ईरान टकराव के तीन प्रमुख आयाम हैंः

भू-राजनीतिकः ईरान पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय वर्चस्व चाहता है, वहीं इज़राइल उसे अपने अस्तित्व के लिए रणनीतिक खतरे के रूप में देखता है।

धार्मिक-सांप्रदायिकः यह संघर्ष शिया इस्लामिक गणराज्य (ईरान) और यहूदी राष्ट्र-राज्य (इज़राइल) के बीच वैचारिक असहिष्णुता का प्रतिनिधित्व करता है।

सुरक्षा-संबंधीः ईरान का परमाणु कार्यक्रम इज़राइल के लिए 'रेड लाइन' बन चुका है।

भारत का दृष्टिकोणः भारत न तो ईरान की कट्टरपंथी इस्लामी क्रांति का पक्षधर है, न ही इज़राइल की सैन्य आक्रामकता का समर्थन करता है।

भारत की प्रमुख चिंता हैः क्षेत्रीय स्थिरता, ऊर्जा आपूर्ति की सततता और प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा।

2. भारत की पश्चिम एशिया नीति का विकास

कालखंड नीति का स्वरूप मुख्य रुझान

1947-1991 गुटनिरपेक्षता (नॉन अलाइनमेंट) अरब और ईरान के पक्ष में झुकाव; इज़राइल से दूरी

1992-2014 व्यवहारवादी यथार्थवाद (रियलिज्म) इज़राइल से राजनयिक संबंध; रक्षा सहयोग; चाबहार परियोजना

2014-वर्तमान मल्टी-अलाइनमेंट + रणनीतिक संतुलन दोनों पक्षों से संबंध; स्थायित्व और व्यावहारिक कूटनीति

'इश्यू बेस्ट अलाइनमेंट' के तहत भारत अब एक ही क्षेत्र में परस्पर विरोधी देशों से भी हित-आधारित संबंध विकसित कर रहा है।

3. भारत-इज़राइल संबंध

1992 में पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित हुए।

भारत इज़राइल से अत्याधुनिक सैन्य तकनीक, ड्रोन, साइबर प्रणाली, निगरानी उपकरण प्राप्त करता है।

कृषि, जल प्रबंधन, नवाचार में विशेष साझेदारी। रक्षा निर्यात में इज़राइल भारत का तीसरा सबसे बड़ा साझेदार (रूस और फ्रांस के बाद)।

(इंडिया, इजराइल, यूएई और यूएसस) भारत को पश्चिम एशिया में एक उभरती शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

4. भारत-ईरान संबंध

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध गहरेः साहित्य, भाषा, ऊर्जा और व्यापार में सहयोग।

चाबहार बंदरगाह भारत की अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुँच का रणनीतिक माध्यम।

ईरान ने ओआईसी में पाकिस्तान-विरोधी मुद्दों पर भारत का समर्थन किया है।

अमेरिकी प्रतिबंधों के चलते भारत को 2019 से ईरानी तेल आयात बंद करना पड़ा।

चीन-ईरान बढ़ती निकटता भारत के लिए रणनीतिक असहजता का कारण बन रही है।

5. भारत की रणनीतिक दुविधाः यथार्थवाद बनाम मूल्य-आधारित कूटनीति

भारत की नीतिः न्यूट्रल-प्रोएक्टिव अप्रोच

भारत किसी पक्ष का प्रत्यक्ष समर्थन नहीं करता।

लेकिन वह मानवीय सहायता, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज, और रक्षा/आपूर्ति लाइनों को सक्रिय रखता है। शटल डिप्लोमेसीः भारत गुप्त कूटनीति के माध्यम से मध्यस्थता की भूमिका निभा सकता है।

स्ट्रेटेजिक इनर्जी डायवर्सिफिकेशनः तेल पर निर्भरता कम करने की नीति।

डायस्पोरा सिक्यूरिटी डॉक्ट्रीनः खाड़ी देशों में भारतीय नागरिकों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता।

6. भारत के लिए संभावित खतरे और अवसर

कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि मुद्रास्फीति और चालू खाता घाटा।

ईरान में अस्थिरता से चाबहार परियोजना और मध्य एशिया संपर्क बाधित हो सकता है।

भारत के भीतर धार्मिक भावनात्मक ध्रुवीकरण की संभावना।

पीस ब्रोकर के रूप में भारत की वैश्विक छवि को विस्तार।

पश्चिम एशिया में तकनीकी और अवसंरचनात्मक निवेश के माध्यम से सॉफ्ट पावर का विस्तार।

भारत-गल्फः ईयू त्रिकोणीय ऊर्जा गठबंधन का सृजन।

7. वैकल्पिक रणनीतिक सिद्धांतः 'वाना डॉक्ट्रीन'

भारत को पश्चिम एशिया को वाना (वेस्ट एशिया-नार्थ अफ्रीका) के व्यापक रणनीतिक फ्रेमवर्क के रूप में देखना चाहिए - यह वैश्विक दक्षिण की नेतृत्वकारी भूमिका का अवसर है।

वाना सिद्धांत के पाँच स्तंभः

1. एनर्जी न्यूट्रीलिटी : किसी एक स्रोत पर निर्भरता नहीं।

2. डायलॉग डिप्लोमेसी : सभी पक्षों से संवाद द्वारा समाधान।

3. डायस्पोरा सेफ्टी : भारतीय नागरिकों की प्राथमिक सुरक्षा।

4. इंफ्रास्ट्रक्चर लिकेंजेसः बंदरगाह, रेल, कॉरिडोर द्वारा संपर्क विस्तार

5. स्ट्रेटेजिक पेशेंस विथ असर्टिवनेस : धैर्य, परंतु दृढ़ नीति।

भारत की विदेश नीति अब 'एकध्रुवीय गुटनिरपेक्षता' से आगे बढ़कर 'बहुध्रुवीय सक्रिय संतुलन' की ओर अग्रसर है। इज़राइल और ईरान जैसेविरोधी राष्ट्रों के साथ समानांतर कूटनीति भारत की रणनीतिक परिपक्वता का प्रमाण है।

यदि युद्ध की स्थिति उत्पन्न होती है, तो भारत को न केवल अपने आर्थिक और सुरक्षा हितों की रक्षा करनी होगी, बल्कि एक विश्वसनीय मध्यस्थ और स्थायित्व समर्थक शक्ति के रूप में भी अपनी भूमिका निभानी होगी।

नेपोटिजम के नगाड़े और टैलेंट की थपकी

अवसर

प्रियांशु कुमार

छात्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा

बॉलीवुड की चमचमाती दुनिया में एक पुरानी कहावत खूब चलती है 'हीरे तो कोयले से ही बनते हैं' लेकिन यहां कई लोग सीधे तिजोरी से निकलकर पर्दे पर आ जाते हैं! जी हाँ, आज हम बात कर रहे हैं उस बॉलीवुड की जहाँ कभी राज कपूर, दिलीप कुमार और अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गज अपने संघर्ष की सीढ़ियाँ चढ़ते थे,और आज वहीं कुछ चेहरे हैं जो सीढ़ियाँ चढ़ने से पहले लिफ्ट से लॉन्च हो जाते हैं।

एक तरफ वो कलाकार हैं जिनकी पहचान उनके हुनर और काम से है, तो वही दूसरी तरफ वो जिनकी पहचान काम से नहीं अपने पिता के नाम से है! जिन्हें 'स्टार किड्स' कहते हैं। स्टार किड्स बनाम सेल्फमेड एक्टर्स' का किस्सा बड़ा दिलचस्प है क्योंकि यहाँ किसी को मौके थाली में मिलते हैं, तो कोई हर एक किरदार के लिए पसीना, धैर्य और सालों की तपस्या लगाता है!

अब बात यह है कि , बॉलीवुड कोई नई चीज़ तो है नहीं। 1913 में जब दादा साहेब फाल्के जी ने 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई, तब से लेकर आज तक इंडस्ट्री ने बहुत कुछ देखा। और आज? आज तो बॉलीवुड एकदम ग्लैमर का अड्डा बन चुका है लाइट, कैमरा और नेपोटिज्म का थोड़ा सा तड़का!

अब बात करते हैं इन स्टार किड्स की। मतलब जिनके बाप-दादा हीरो, मम्मी हिरोइन और घर में डायरेक्टर-प्रोड्यूसर बैठे हों, उनके लिए तो रोल मिलना जैसे एक कहावत नहीं है घर की मुर्गी दाल बराबर, लेकिन नाम बनाना? भाईसाहब, आसान नहीं है!

जैसे अमिताभ बच्चन जी को सब 'महानायक' कहते हैं, लेकिन उनके बेटे अभिषेक बच्चन का क्या हाल हुआ? कई फिल्में की, लेकिन नायक बनते-बनते 'डायलॉग' ही गुम हो गए। चंकी पांडे की बेटी अनन्या पांडे बहुत कोशिश कर रही हैं लेकिन अभी तक दर्शकों का दिल जीतना बाकी है। और सुनील शेट्टी की बेटी आथिया शेट्टी 3 फिल्में करके पता नहीं कहां गायब हो गईं, जैसे वाई-फाई का नेटवर्क चला जाए।

और भाई सलमान खान के भाई लोग अरबाज़ और सोहेल एकदम भाई के नाम के नीचे दब गए। घर में भाई सुपरस्टार हो तो बाकी सब बैकग्राउंड आर्टिस्ट लगते हैं! लेकिन हां, कुछ स्टार किड्स हैं जो वाकई मेहनत से ऊपर उठे ऋतिक रोशन, आलिया भट्ट, वरुण धवन, श्रद्धा कपूर, टाइगर श्रॉफ इन सबने अपने टैलेंट से साबित किया कि 'बाप का नाम' नहीं, 'अपनी मेहनत' से ही पहचान बनती है।

अब इन सबके बीच आते हैं असली गेम चेंजर बिना गॉडफादर वाले एक्टर्स! शाहरुख खान दिल्ली से चला लड़का, सपनों को लेके आया और आज 'किंग खान' कहलाता है। अक्षय कुमार एक्शन में भी सुपरहिट, कॉमेडी में भी सुपरहिट। राजकुमार राव, विक्की कौशल, सुशांत सिंह, कार्तिक आर्यन, तापसी पन्नू ये वो नाम हैं जिन्होंने ऑडिशन के पसीने से मुकाम पाया है। इनका कोई 'फिल्मी मामा' नहीं था, लेकिन आज ये सबके चहेते हैं। सुशांत सिंह आज इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन यह शख्स अपने अभिनय और मेहनत के बल पर कुछ ही फिल्मों से दर्शकों का दिल जीत लिया।

ओटीटी के आ जाने के बाद तो ऐसे ऐसे अभिनेता और अभिनेत्री सामने दिख रहे हैं जिनका अभिनय सजीव लगता है । देखने के बाद मुंह से निकलता है क्या बात है भाईसाहब ।

असल बात ये है दोस्तों आज के दर्शक चेहरे नहीं, टैलेंट देखना चाहते हैं। आज की ऑडियंस गूगल पर एक्टिंग स्किल सर्च करती है, बाप का नाम नहीं! इसलिए जितने भी स्टार किड्स हैं, उनके लिए सिर्फ डेब्यू करना काफी नहीं है, असली खेल तो तब शुरू होता है जब दर्शक टिकट कटाएं और तालियां बजाएं।

तो सवाल यही है स्टार किड्स क्या सिर्फ इंस्टाग्राम फॉलोअर्स में ही स्टार रहेंगे या थिएटर में भी छा पाएंगे? ये तो आने वाला वक्त बताएगा। फिलहाल तो मेहनत ही है जो पर्दे पे चमक रही है और टैलेंट है जो टिकट खिड़की पर धमक रही है!

हौसला कायम रहे तो कायनात भी साथ देती है ...

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

मानव सभ्यता का विकास क्रम भी इसी के चलते आज की अति उन्नत अवस्था को प्राप्त कर सका है। यही नहीं अपितु यह सिलसिला आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। आगे, आगे और आगे बढ़ने की चाहत के साथ हर क्षेत्र में आगे बढ़ते लोगों के उदाहरण तो हमें अपने आसपास ही देखने को मिल जाएंगे। लेकिन हम अपनी दृष्टि जितनी विशाल करेंगे, उतनी ही महान शख्सियत के बारे में जानकारी जुटा पाएंगे। आजकल के दौर में असंभव तो कुछ भी नहीं रह गया है। एक प्रकार से अब 'असंभव' ही असंभव है, शेष सब कुछ संभव है। यह सब हौसलों की बुलंदगी का ही परिणाम है कि कल तक जो कुछ कल्पना से भी सर्वथा परे था, आज सहज संभव नजर आने लगा है। ऐसा नहीं है कि यह सब पलक झपकते ही संभव हो गया हो। दरअसल तमाम तरह के विकास के कारक तत्वों में बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने का माद्दा सन्निहित है। जिसके चलते निरंतर अनुसंधान कार्यों के साथ-साथ वृहद स्तर के उद्योगों की स्थापना संभव हुई। फलस्वरूप व्यापार व्यवसाय का भी दूत गति से विस्तार हुआ। रोजगार के नए-नए आयाम स्थापित होने लगे और आम नागरिकों का जीवन स्तर लगातार ऊंचा उठना गया। जिसके चलते हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जनजीवन मे क्रांतिकारी बदलाव आ गया।

हौसलों की बुलंदगी के चलते सारी कायनात हमारे सुर में सुर मिलाने लगती है। अंतर्मन में उत्साह का संचार सफलता की पृष्ठभूमि तैयार कर देता है। किसी नेक काम को करने के नेक इरादे होने पर आत्मबल ही इतना सशक्त हो जाता है कि असंभव शब्द कहीं दूर पीछे छूट जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी मन, वचन और कर्म की एकाग्रता से सिद्धत्व क प्राप्त किया जा सकता है। इतिहास साक्षी है कि विभिन्न इतिहास पुरुषों ने अपने-अपने क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करते हुए मानव जीवन को खुशनुमा बनाने में अपना अहम योगदान दिया है। ठेठ आखेट युग से आज के औद्योगिक और वैज्ञानिक युग तक की विकास यात्रा यूं ही पूर्ण नहीं हो सकी है।

कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें कुछ कर गुजरने की जिद और जुनून के चलते अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के सहारे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त नहीं की गई हो। मानव सभ्यता का विकास क्रम भी इसी के चलते आज की अति उन्नत अवस्था को प्राप्त कर सका है। यही नहीं अपितु यह सिलसिला आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। आगे, आगे और आगे बढ़ने की चाहत के साथ हर क्षेत्र में आगे बढ़ते लोगों के उदाहरण तो हमें अपने आसपास ही देखने को मिल जाएंगे। लेकिन हम अपनी दृष्टि जितनी विशाल करेंगे, उतनी ही महान शख्सियत के बारे में जानकारी जुटा पाएंगे। आजकल के दौर में असंभव तो कुछ भी नहीं रह गया है। एक प्रकार से अब 'असंभव' ही असंभव है, शेष सब कुछ संभव है।

यह सब हौंसलों की बुलंदगी का ही परिणाम है कि कल तक जो कुछ कल्पना से भी सर्वथा परे था, आज सहज संभव नजर आने लगा है। ऐसा नहीं है कि यह सब पलक झपकते ही संभव हो गया हो। दरअसल तमाम तरह के विकास के कारक तत्वों में बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने का माद्दा सन्निहित है। जिसके चलते निरंतर अनुसंधान कार्यों के साथ-साथ वृहद स्तर के उद्योगों की स्थापना संभव हुई। फलस्वरूप व्यापार व्यवसाय का भी दूत गति से विस्तार हुआ। रोजगार के नए-नए आयाम स्थापित होने लगे और आम नागरिकों का जीवन स्तर लगातार ऊंचा उठना गया। जिसके चलते हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जनजीवन मे क्रांतिकारी बदलाव आ गया।

दुनिया भर में तरक्की की रफ्तार निरंतर तीव्र होती जा रही है। कल तक हमारा देश कृषि प्रधान होने के बावजूद खाद्यान्न पूर्ति के लिए विदेशों पर निर्भर रहा करता था। लेकिन देखते ही देखते हर एक क्षेत्र में बुलंद हौसले के साथ हम आगे बढ़ते रहे और बढ़ते-बढ़ते अविकसित से विकासशील और अब लगभग विकसित देशों की श्रेणी में आते जा रहे हैं। इस स्थिति के मूल में राजनीतिक नेतृत्व के साथ-साथ व्यापार व्यवसाय, शिक्षा एवं चिकित्सा जगत के पुरोधाओं का बुलंद हौसला ही था, जिसके चलते विभिन्न क्षेत्रों में जोखिम लेने की क्षमता का विस्तार हुआ। दरअसल हर एक क्षेत्र में बड़े लक्ष्य को सामने रखकर कार्य योजनाएं बनाई गई, जिसके चलते सकारात्मक परिणाम आए।

आज हम शहरी परिवेश को देखें या ग्रामीण, हर तरफ आमूलचूल परिवर्तन की स्थिति दिखाई देती है। शहर और अधिक विकसित हो रहे हैं, तो विभिन्न नगर, गांव एवं कस्बों में भी आम नागरिकों का रहन-सहन का जीवन स्तर अत्यधिक सुधार पर देखा जा सकता है। तकनीक घर-घर दस्तक दे चुकी है, नागरिकों की बौद्धिक क्षमता तो बड़ी ही है लेकिन उनकी तर्कशक्ति भी जागृत होती जा रही है। कृषि कार्य का आधुनिकीकरण हो गया है, व्यापार व्यवसाय का स्वरूप भी परिवर्तित हो गया है और कल तक की विलासिता पूर्ण आवश्यकता अब काफी हद तक आरामदायक आवश्यकता बनती जा रही है। जिसके चलते देश की तब की और अब की तस्वीर में व्यापक बदलाव आ चुका है।

व्यक्ति विशेष की जीवन शैली में परिवर्तन आना बहुत स्वाभाविक है। समाज विशेष की जीवन शैली में परिवर्तन आना भी एकबारगी स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन करोड़ों नागरिकों की जीवन शैली में देखते ही देखते व्यापक परिवर्तन आ जाना एक असाधारण स्थिति है। दरअसल बुलंद हौसलों के साथ देश और समाज का बहुसंख्यक वर्ग अपनी जोखिम उठाने की क्षमता विकसित करते हुए अपने-अपने क्षेत्र में पराक्रम करने की भावना से भर उठा है। जिसका सकारात्मक परिणाम इस रूप में सामने आ रहा है कि वैश्विक परिदृश्य में अपना देश एक महत्वपूर्ण स्थान रखने लगा है। और अभी और आगे बढ़ने की चाहत में कमी नहीं आई है।

उक्त परिस्थितियों के संदर्भ में हमें अपनी सकारात्मक सोच के साथ अपने-अपने क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ने की और अधिक इच्छाशक्ति जागृत करने की आवश्यकता है। हमें यह ध्यान रखना होगा कि देश-दुनिया की तीव्र तरक्की के दौर में हम कहीं पीछे न छूट जाएं। इसलिए बेहतर यही होगा कि अपनी कमजोरी या लाचारी को लेकर किसी और को दोष देने की अपेक्षा अपने आत्मबल को मजबूत बनाने की दिशा में विचार करें। देश-दुनिया के हर एक क्षेत्र में जितने भी सफलतम सितारे है, गहराई से देखें तो उनके लिए परिस्थितियां कभी भी आज इतनी आसान नहीं थी। दरअसल उनकी सफलता के पीछे उनके बुलंद हौसलों का बड़ा हाथ रहा होगा।

660 राशन दुकानों से उपभोक्ताओं को मिलता है राशन, तीन माह का आवंटन शुरू

ई-केवायसी नहीं, 69 हजार उपभोक्ताओं के राशन पर लगा होल्ड

संजय द्विवेदी, बैतूल। पिछले तीन माह से राशन कार्डधारियों की ई-केवाईसी करवाई जा रही है। इसके बाद भी अब तक शत प्रतिशत ई-केवाईसी नहीं हो पाई है। इसके चलते अब शासन स्तर से उपभोक्ताओं का राशन रोका जा रहा है। इससे जिले में करीब 69 हजार लोगों को उस समय तक राशन नहीं मिलेगा, जब तक कि वह ई-केवायसी नहीं करवा लेते है। जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी कृष्ण कुमार टेकाम ने बताया कि जिले में 660 उचित मूल्य की दुकानें हैं। जहां से करीब 3 लाख 10 हजार परिवारों के लगभग 12 लाख 50 हजार सदस्य प्रतिमाह राशन लेते थे, लेकिन अब भी मात्र 93.2 फीसदी सदस्यों ने ई-केवाईसी करवाई है। जिन लोगों ने ई-केवायसी नहीं कराई है, उनका राशन रोक दिया है। अगर जल्द ही इन उपभोक्ताओं ने ई-केवाईसी नहीं कराई तो उनका राशन वितरण से नाम हटा दिया जाएगा। वर्तमान में उनका राशन रोका गया है। यह लोग राशन लेने के लिए दुकान पर आकर ई-केवाईसी कराते हैं तो उन्हें राशन का आवंटन किया जाएगा। दरअसल खाद्य मंत्रालय ने साफ तौर पर कहा है कि यदि ई-केवाईसी नहीं कराई गई तो ऐसे हितग्राहियों को राशन नहीं दिया जाएगा। हितग्राहियों को उचित मूल्य दुकानों पर पहुंचकर पीओएस मशीन से ई-केवाईसी कराना जरूरी है।

3 बार लगाना पड़ रहा है अंगूठा, 3 बार आएगा मैसेज– तीन माह का एक साथ राशन वितरण होने पर तीन माह के हिसाब से उपभोक्ताओं को अंगूठा लगाना पड़ रहा है। साथ ही इसका तीन बार अलग-अलग मैसेज भी उपभोक्ताओं के मोबाइल पर आएंगे। इससे राशन वितरण की पारदर्शिता बनी रहेगी। अगर किसी कारण से उपभोक्ता इस माह राशन नहीं ले पाता है तो वह आगामी माह में भी एक साथ तीन माह का राशन ले सकता है। यानि तीन माह का राशन वितरण किया जा रहा है। जिला खाद एवं आपूर्ति अधिकारी श्री टेकाम ने बताया कि जिन लोगों के द्वारा ई-केवायसी नहीं कराई जायेगी, उन्हें राशन नहीं मिलेगा। जो मृत हो गए या लडक़ी की शादी हो चुकी, परिवार का पलायन हो चुका हो। इसके बाद भी उनके परिवार के सदस्य उनके नाम का राशन ले रहे थे। ई-केवाईसी के बाद ऐसे उपभोक्ताओं के नाम काटे जा रहे है। अब मात्र पात्र हितग्राहियों को ही राशन का वितरण किया जा रहा है।

जितने सदस्यों की ई-केवाईसी, उतना ही मिलेगा राशन– राशन दुकानों से अब हितग्राहियों को उतने ही सदस्यों का राशन प्राप्त होगा, जितने सदस्यों की ई-केवाईसी हुई है। यानि परिवार में चार सदस्य है और तीन ही सदस्य ने ई-केवायसी कराई है तो पीओएस मशीन से तीन ही लोगों का राशन प्रदर्शित होगा, जब चौथा सदस्य ई-केवाईसी करायेगा, उसके बाद ही उसका राशन प्रदर्शित होगा। श्री टेकाम ने बताया कि पहले पोर्टेबिलिटी के तहत हितग्राही कहीं से भी राशन ले सकता था, लेकिन अब पोर्टेबिलिटी में राशन तब ही मिलेगा, जब परिवार के सभी सदस्यों का ई-केवाईसी हुई हो। अन्यथा हितग्राही को राशन अपनी मूल राशन दुकान से ही राशन लेना होगा।

अब नहीं चलेगी बहानेबाजी, ई-केवाईसी अनिवार्य – अब राशन दुकानों पर बहानेबाजी नहीं चलेगी। पहले हितग्राही बहानेबाजी करके सदस्यों के बाहर जाने का बहाना कर देते थे और राशन ले लेते थे, लेकिन अब जितने सदस्यों की ई-केवाईसी होगी, उसी हिसाब से राशन दुकान से राशन प्राप्त होगा। श्री टेकाम ने बताया कि जिन्होंने ई-केवाईसी नहीं कराई है, उन्हें वन नेशन, वन कार्ड की सुविधा से वंचित रहकर राशन से मरहूम होना पड़ेगा। बैतूल जिले की बात करें तो पात्र व्यक्ति को सरकार की तरफ से 3 किलो गेहूं, 2 किलो चावल दिया जाता है, जबकि अंत्योदय योजना के हितग्राहियों को 22 किलो गेहूं, 1 किलो शकर, 13 किलो चावल व 1 रुपए प्रति किलो नमक मिलता है।

इनका कहना है –

अभी तक जिले में 93.2 प्रतिशत लोगों की ई केवाईसी कराई जा चुकी है। जिन राशन हितग्राहियों ने ई केवायसी नहीं कराई है, उनका राशि होल्ड कर दिया है। उन्हें तब ही राशन मिलेगा, जब वे ई केवाईसी करायेगे।

–कृष्ण कुमार टेकाम,
जिला खाद एवं आपूर्ति अधिकारी, बैतूल

फिलिस्तीन के साथ एकजुटता वामपंथी दलों का प्रदर्शन

भोपाल। फिलिस्तीन के साथ एकजुटता के राष्ट्रीय दिवस के आव्हान के तहत 17 जून को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने भोपाल के इतवारा चौराहे के समीप फिलिस्तीन के साथ एकजुटता का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान फिलिस्तीन का साथ, मानवता का साथ आदि नारे लगाए गए।

इस अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने कहा कि फिलिस्तीन के साथ एकजुटता का अर्थ मानवीय मूल्यों के साथ वामपंथी दलों की प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है।मानवता की रक्षा के लिए फिलिस्तीन को भूख और बदहाली से बचाने के लिए सारी दुनिया की अमन पसन्द,प्रगतिशील ,वामपंथी ताकतों को एकजुट होकर जनता को लामबंद करना चाहिए और इजराइल द्वारा अमेरिका की शह पर फिलिस्तीन की जनता पर किए जा रहे अत्याचार का कड़ा प्रतिरोध करना चाहिए।भारत सरकार को भी फिलिस्तीन के साथ दशकों से जारी बेहतर सम्बन्धों की परम्परा को विकसित कर खुलकर फिलिस्तीन का समर्थन करना चाहिए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता कॉमरेड पूषण भट्टाचार्य ने भी सम्बोधित किया।

प्रदर्शन में कॉमरेड पी वी रामचन्द्रन,फिदा हुसैन, तेजराम टीग्गा ,हाजी मोहम्मद इमरान ,सुरेन्द्र जैन, पी एन वर्मा, किशोरी वर्मा, उपेन्द्र यादव ,शेर सिंह, बी पी मिश्रा,शहाबुद्दीन,जितेन्द्र रैकवार,राजू खान,राजा खान, हुनेजा खान सहित बड़ी संख्या में वामपंथी दलों के सदस्य उपस्थित थे।

शराब दुकानें हुई बंद तो प्रारंभ हुई घर पहुंचाओ अवैध शराब सेवा

शराब की होम डिलीवरी करने वाला पकड़ाया

बैतूल/मुलताई। प्रदेश सरकार ने प्रदेश की 17 धार्मिक पवित्र नगरों से शराब दुकानों को हटाने का निर्णय लिया, तो पवित्र नगरी मुलताई में शासकीय शराब दुकान बंद हो गई, किंतु इसके साथ ही अवैध शराब व्यापारियों ने अब अवैध शराब की घर पहुंच सेवा प्रारंभ कर दी है। हाल ही में पुलिस ने एक युवक को डिक्की में देसी विदेशी शराब रखकर होम डिलीवरी करने के

आरोप में गिरफ्तार किया है। शराबबंदी के बाद नगर में शराब माफिया सक्रिय हो गए हैं। मुलताई पुलिस ने बस स्टैंड क्षेत्र से एक युवक को शराब की होम डिलीवरी करते हुए पकड़ा है। थाना प्रभारी देवकरण डहेरिया के अनुसार सूचना मिलने पर विशेष टीम ने दबिश दी। टीम ने गणेश डांगे नामक युवक को देशी और विदेशी शराब की बोतलों के साथ गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। साथ ही उसके मोबाइल कॉल डिटेल्स की जांच भी की जा रही है। थाना प्रभारी ने बताया कि पिछले दो महीनों में अवैध शराब से जुड़े 175 मामले दर्ज किए गए हैं। पुलिस ने अवैध शराब की खेती भी पकड़ी है। वर्तमान में मुलताई में दिव्य सूर्य महायज्ञ चल रहा है। देशभर से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। पुलिस अलर्ट मोड पर है। शराब माफिया और अवैध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है।

मप्र मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड भोपाल का 23वॉ स्थापना दिवस मनाया

बैतूल। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल वृत्त कार्यालय में मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड का 23वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान महाप्रबंधक अनूप सक्सेना, भूपेन्द्र सिंग बघेल, हितेश वशिष्ठ उपमहाप्रबंधक एवं अन्य अधिकारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा मां सरस्वती के छायाचित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ जिले के उच्च दाब एवं निम्नदाब उपभोक्ताओं का सम्मान, पौधरोपण तथा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक अनूप सक्सेना द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सच्ची निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करने की शपथ दिलाई गई। इस दौरान श्री सक्सेना द्वारा माननीय प्रबंध संचालक भोपाल के संदेश का भी वाचन किया गया एवं उपस्थित उच्चदाब एवं निम्नदाब उपभोक्ताओं को कंपनी द्वारा दी जा रही सुविधाओं से तथा विगत 23 वर्षों से कंपनी द्वारा उपभोक्ता हित में किये गये कार्यों से अवगत कराया गया। इस अवसर पर उच्च दाब उपभोक्ता डब्लू सी.एल. के प्रतिनिधि लक्ष्मीकांत महापात्रा महाप्रबंधक एवं मुकेश खंडेलवाल ने कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं को दी जा रही सुविधाओं की सराहना की। महाप्रबंधक एवं अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा कार्यालय प्रांगण में पौधारोपण किया गया। इसके अलावा अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 25 यूनिट रक्तदान किया। कार्यक्रम के अंत में हितेश वशिष्ठ द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित उपभोक्ताओं एवं अधिकारियों, कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया गया।

वीवीएम कालेज की पूर्व छात्र का असिस्टेंट प्रोफेसर हेतु चयन

खुशी बड़ोनिया पहले प्रयास में ही एमपीपीएससी में चयनित, वीवीएम कॉलेज प्रबंधन ने किया सम्मान

बैतूल। विवेकानंद विज्ञान महाविद्यालय की बीकॉम संकाय की पूर्व छात्रा खुशी बड़ोनिया ने एमपी सेट की परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण कर मप्र. लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। उनका मप्र लोकसेवा आयोग द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर पद हेतु हाल ही में घोषित परीक्षा परिणाम में चयन हुआ है। उनकी इस उपलब्धि पर मंगलवार दोपहर को वीवीएम कॉलेज में खुशी का एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें महाविद्यालय के अध्यक्ष विजय साबले, प्राचार्य डॉ. कृष्णा खासदेव, सचिव निर्गुण देशमुख, उपाध्यक्ष कमलेश गढ़ेकर एवं श्री बालापुरे सर तथा कॉमर्स संकाय के प्राध्यापक अनिल सोनी सहित पूरे वीवीएम कॉलेज परिवार ने उनका शाल, श्रीफल एवं शील्ड प्रदान कर सम्मान व अभिनंदन किया। इस अवसर पर कॉलेज के अध्यक्ष विजय साबले ने कहा कि आज हमारी खुशी कई गुना बढ़ गई है, जब हमारे कॉलेज की छात्रा खुशी बड़ोनिया ने अपने पहले ही प्रयास में एमपीपीएससी की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार दोनों को सफलतापूर्वक अच्छे अंकों से उत्तीर्ण किया है। कॉलेज के प्राचार्य कृष्णा खासदेव एवं सचिव निर्गुण देशमुख ने इस अवसर पर कहा कि खुशी, जो कि एक मध्यमवर्गीय परिवार से आती है, एवं उनका परिवार सदर बैतूल में कपड़ों की दुकान संचालित करता है, तथा अभी तक उनके परिवार से कोई भी शासकीय सेवा में नहीं है, ऐसे में खुशी ने अपनी मेहनत और लगन से कठिन लक्ष्य प्राप्त करके यह साबित कर दिया है कि संसाधनों की कमी, कभी भी रुकावट नहीं बनती। इस अवसर पर कॉलेज के उपाध्यक्ष कमलेश गढ़ेकर ने कहा कि खुशी की उपलब्धि से न सिर्फ उनके परिवार में खुशी का माहौल है, बल्कि पूरे वीवीएम परिवार के साथ-साथ पूरे जिले को उन पर गर्व है। खुशी ने अपनी सफलता का श्रेय उनके पिता अखिलेश तथा माता श्रीमती शशी बड़ोनिया के सहयोग तथा वीवीएम कॉलेज के वाणिज्य संकाय प्राध्यापक प्रो. अनिल सोनी के मार्गदर्शन तथा वाणिज्य संकाय के शिक्षकों के विशेष योगदान को दिया है। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी, प्राध्यापक हरीश माकोड़े, मनोज कनाठे, पंकज परिहार, सहायक प्राध्यापकगण सुनील जैन, डॉ. गायकवाड, उज्ज्वला पांसे, हेमलता लोखंडे, श्वेतल चौबे, नीलिमा उपाध्याय, शिखा शुक्ला, पुष्पक देशमुख, पवन धोटे, रसायन शास्त्र विभाग के आशीष पवार, आभा हजारे, अर्चना पाल, सोलंकी, पंडागरे सर सहित महाविद्यालय परिवार के विद्यार्थियों ने खुशी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं है।

भैंसदेही में सीएमसीएलडीपी परीक्षा का निरीक्षण करने पहुंचे मोहन नागर

पौधारोपण कर दिया पर्यावरण बचाने का संदेश, मां के नाम लगाया बरगद का पौधा

बैतूल। विकासखंड भैंसदेही में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा संचालित सीएमसीएलडीपी कार्यक्रम अंतर्गत एमएसडब्ल्यू एवं बीएसडब्ल्यू की परीक्षाओं का निरीक्षण मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष एवं राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त मोहन नगर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही के प्रांगण में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत बरगद, आम और जाम के पौधे का रोपण किया। निरीक्षण के दौरान मोहन नगर ने विद्यार्थियों से संवाद भी किया और उन्हें प्रेरित किया कि वे पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आएं। उन्होंने कहा कि आज के समय में पेड़ लगाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी बन गई है। जिस प्रकार हम अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, उसी तरह वृक्षों का भी ध्यान रखना चाहिए। हर शुभ कार्य के अवसर पर एक पौधा लगाना न सिर्फ हमारी संस्कृति का हिस्सा होना चाहिए, बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है।

पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान शासकीय महाविद्यालय के प्राचार्य जितेंद्र कुमार दवंडे, जिला समन्वयक प्रिया चौधरी, विकासखंड समन्वयक विकास कुमरे, भाजपा मंडल अध्यक्ष केसर लोखंडे, सत्य देवी लोखंडे, श्रवण मन्नासे, शिवकुमार बावने, सोहन सिंह काकोडयि़ा, उमेश कुमार चरपे, जागेंद्र धोटे, शैलेन्द्र बारंगे, वीरेंद्र सिंह चौहान सहित सीएमसीएलडीपी के मेंटर्स एवं नवांकुर प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने पौधों की सुरक्षा का संकल्प लिया और पर्यावरण संरक्षण को लेकर सजग रहने की शपथ ली।

सूर्य महायज्ञ के छठवें दिन तक बनाए गए एक करोड़ से अधिक शिवलिंग

नेताओं ने लिया जगत गुरु शंकराचार्य का आशीर्वाद

बैतूल/मुलताई। राम मंदिर ट्रस्ट भूमि पर माँ ताप्ती उदगम उद्धार समिति द्वारा आयोजित सूर्य महायज्ञ एवं सवा करोड़ शिवलिंग निर्माण के छठवें दिन तक एक करोड़ से अधिक पार्थिव शिवलिंग का निर्माण किया जा चुका है। पवित्र नगरी में हो रहे हैं इस भव्य धार्मिक आयोजन में अनेक प्रमुख राजनीतिक लोग भी भाग ले रहे है। कांग्रेस-बीजेपी से जुड़े नेता यज्ञ स्थल पर पहुंचकर पूजा पाठ कर भस्म आरती में शामिल हो रहे हैं और जगतगुरु शंकराचार्य के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य सदानंद सरस्वती की उपस्थिति में सूर्य यज्ञ एवं शिवलिंग निर्माण पूजन कार्य महामंडलेश्वर प्रबोधानन्द गिरी महाराज, धर्माचार्य सोमेश परसाई एवं 31 ब्राह्मणों के द्वारा धार्मिक रीति रिवाज से कराया जा रहा है। दिनेश कालभोर एवं भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू ने बताया कि यज्ञ स्थल पर प्रतिदिन 5000 से अधिक महिलाएं 23 लाख से अधिक शिवलिंग का निर्माण कर रही है ।शिवलिंग निर्माण के लिए प्रत्येक पंक्ति में 55 महिलाएं शिवलिंग निर्माण कर रही है।

शिवलिंग निर्माण के छठवें दिन 55 महिलाओं की 85 पंक्तियां बनाई गई है। इस संपूर्ण आयोजन में कार्यक्रम आयोजन समिति ताप्ती उद्गम उद्धार समिति के अलावा महिला संगठन की भूमिका जहां सराहनीय दिखाई देती है वही कार्यक्रम में महिलाओं की उपस्थिति भी उल्लेखनीय है।

यज्ञ स्थल पहुंचे पूर्व कांग्रेस मंत्री एवं भाजपा नेता– पूर्व मंत्री सुखदेव पांसे ने अपने समर्थकों के साथ सभा स्थल पर पहुंचकर जगतगुरु शंकराचार्य सदानन्द सरस्वती एवं महामंडलेश्वर प्रबोधानन्द गिरी महाराज, धर्माचार्य सोमेश परसाई भेंटकर उनका आशीर्वाद ग्रहण किया। इसके अलावा भाजपा नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के भाई सुरजीत सिंह चौहान, भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद माया नारोलिया भी यज्ञ स्थल पहुंची और जगतगुरु शंकराचार्य एवं महामंडलेश्वर महाराज का आशीर्वाद ग्रहण किया।

लायंस क्लब महक की अध्यक्ष बनीं लायन उमा पवार

लायंस क्लब बैतूल महक की नई कार्यकारिणी घोषित

बैतूल। लायंस क्लब बैतूल महक की वर्ष 2025-26 के लिए नई कार्यकारिणी का गठन पूर्ण हो चुका है। नामांकन समिति की बैठक में लायंस इंटरनेशनल के संविधान के अनुरूप चयन प्रक्रिया संपन्न की गई। समिति द्वारा चयनित पदाधिकारियों की सूची को क्लब बोर्ड ने सर्वसम्मति से अनुमोदित कर नामों की औपचारिक घोषणा की।

इस वर्ष लायंस क्लब महक की अध्यक्ष लायन उमा पवार होंगी। वहीं लायन मंजुला पाठक को सचिव और लायन संध्या बोहरे को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है। सह-सचिव रक्षा अग्रवाल और सह-कोषाध्यक्ष सपना सिकेरा होंगी। इसी तरह प्रथम उपाध्यक्ष संगीता गुप्ता, द्वितीय उपाध्यक्ष रंजना झोड़ को बनाया गया है। मेम्बर शिप एडवाइजर लायन सपना सोनी, लायन मधुबाल देशमुख, सर्विस एक्टिविटी चेयरपर्सन लायन कंचन आहूजा, हंगर एक्टिविटी चेयरपर्सन लायन दीप्ति दुबे, यूथ एक्टिविटी चेयरपर्सन लायन डॉ. निहारिका भावसार, एलसीआईएफ चेयरपर्सन

लायन चंद्र कांता गाकरे, कैंसर एक्टिविटी चेयरपर्सन लायन कीर्ति चंदेल, डायबिटीज चेयरपर्सन लायन महिमा सोनवने, दृष्टि चेयरपर्सन लायन संगीता घोड़की, टेल ट्विटर रजनी ठाकुर, बोर्ड आफ डायरेक्टर लायन सपना सोनी, लायन कंचन आहूजा, लायन डॉ.निहारिका भावसार, लायन एमजेएफ मधुबाला देशमुख, लायन दीप्ती दुबे है।

एम्स भोपाल में राजभाषा कार्यान्वयन को सशक्त बनाने हेतु विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन

समिति की 29वीं तिमाही बैठक आयोजित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (डीओएलआईसी) की 29वीं तिमाही बैठक दिनांक 16 जून 2025 को सफलतापूर्वक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता स्वयं प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने की, जिसमें संस्थान के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों एवं समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। बैठक के दौरान प्रो. सिंह ने संस्थान में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन की विभागवार समीक्षा की और विभागाध्यक्षों से हिंदी के उपयोग की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को और अधिक बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर कर्नल (डॉ.) अजीत कुमार, उपनिदेशक (प्रशासन) ने कहा, हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सुविधाजनक और संतोषजनक अनुभव होता है। हमारे अनेक सदस्य हिंदी पर अच्छी पकड़ रखते हैं। मैं सभी से अनुरोध करता हूँ कि यथासंभव अधिकाधिक शासकीय कार्य राजभाषा में करने का प्रयास करें। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, यह बैठक तभी सार्थक होगी जब समिति के सभी सदस्य स्वयं हिंदी में कार्य करें और अपने सहयोगियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें। जैसे हमारा संस्थान चिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है, उसी गति से प्रशासनिक कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाना हमारा दायित्व है।

सहकारिता में हुए नवाचारों और उपलब्धियों से अवगत होगी केन्द्र सरकार

केन्द्रीय सहकारिता राज्य मंत्री की उपस्थिति में होगी उच्च स्तरीय बैठक

भोपाल। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने 20 जून को केन्द्रीय सहकारिता राज्य मंत्री की उपस्थित में होने वाली उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की तैयारियों संबंधी आवश्यक बैठक ली। प्रस्तावित बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अध्यक्षता करेंगे। बैठक में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सहकारिता विभाग में किये गये नवाचारों और उपलब्धियों को बताया जायेगा। बैठक में सहकारिता विभाग से जुड़े मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास, पशुपालन एवं डेयरी, लघु वनोपज संघ के अधिकारी भी शामिल होंगे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि बैठक में मध्यप्रदेश में विकास की ओर सहकारिता के कदम में किये गये सीपीपीपी मॉडल और बीज संघ द्वारा जारी चीता ब्रांड आदि की जानकारी दी जाये। मध्यप्रदेश में बहुउद्देशीय व्यवसायिक केन्द्र के रूप में पैक्स का रूपांतरण, अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष में किये गये और प्रस्तावित कार्यक्रमों से अवगत करवाया जाये। साथ ही सहकारिता विभाग में किये जा रहे हर आयामों जैसे विशेष कार्यक्रम, प्रशिक्षण, एडवांस स्टोरेज, माइक्रो एटीएम सहित 1 से 6 जुलाई को होने वाले कार्यक्रमों का भी समावेश किया जाये।

मंत्री श्री सारंग ने कहा है कि केन्द्र सरकार द्वारा सहकारिता क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए निर्धारित 'सहकार से समृद्धि' के विज़न के अंतर्गत दी गई गाइड-लाइन्स के प्रभावी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन के बारे में भी जानकारी दी जाये।

मंत्री श्री सारंग ने प्रदेश के पैक्स की वर्तमान स्थिति, पैक्स अंतर्गत की जा रही गतिविधियाँ, प्रदेश के सहकारी बैंकों की वर्तमान स्थिति एवं सुदृढ़ीकरण पर चर्चा, पैक्स सोसाइटी द्वारा खाद एवं बीज वितरण व्यवस्था, पैक्स कम्प्यूटराइजेशन, प्रत्येक पंचायत में पैक्स, प्राथमिक डेयरी एवं मत्स्य पालन सहकारी समितियों का गठन एवं संचालन, पैक्स के माध्यम से सीएससी सेवाएं, जन-औषधि केन्द्र का संचालन, भारतीय बीज सहकारी समिति, नई राष्ट्रीय सहकारी जैविक समिति, एफपीओ का गठन एवं भविष्य की कार्य-योजना की प्रगति की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए।

बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णवाल, प्रबंध संचालक विपणन संघ श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त सहकारिता एवं पंजीयक श्री मनोज पुष्प, उप सचिव श्री मनोज सिन्हा, प्रबंध संचालक अपेक्स बैंक श्री मनोज गुप्ता सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही

विदिशा (निप्र)। लटेरी तहसील के ग्राम मलनिया में शासकीय भूमि पर अतिक्रमण होने की सूचनाएं प्राप्त होने पर स्थानीय एसडीएम श्री विनीत तिवारी ने आज पुलिस बल के सहयोग से शासकीय भूमि को अतिक्रमण से विमुक्त कराया है।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने थाना बासौदा में दर्ज प्रकरण के फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए नगद इनाम देने की घोषणा की है। थाना बासौदा शहर में दर्ज अपराध क्रमांक 201/2025 के फरार आरोपी लल्ला उर्फ जोया उर्फ दिलशाद पुत्र जिन्दा उम्र 28 साल निवासी इमाम गेट मोहल्ला कैराना जिला शामली (उप्र) की सूचना देने वालो को पांच हजार रूपए एवं अपराध क्रमांक 95/2022 के फरार आरोपी बलदेव पुत्र हुकुम शर्मा निवासी ग्राम भरनाखुर्द थाना बरसाना तहसील गोवर्धन जिला मथुरा (उप्र) की सूचना देने, गिरफ्तारी में मदद करने वाले के लिए तीन हजार रूपए का इनाम घोषित किया गया है सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

सीएमएचओ डॉ.हुरमाडे ने जिला चिकित्सालय का किया निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मनोज कुमार हुरमाडे ने शनिवार को जिला चिकित्सालय बैतूल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्रसूति वार्ड, एआरटी कक्ष, मेल मडिकल वार्ड, प्रसव पूर्व एवं प्रसव पश्चात वार्ड, पीआईसीयू, आपातकालीन आकस्मिक कक्ष, शिशु वार्ड, ब्लड बैंक एवं उमंग क्लीनिक का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सबंधित चिकित्सा प्रभारी, वार्ड प्रभारी, स्टाफ को मरीजों से सहानुभूतिपूर्वक सद्व्यहार अपनाने एवं सहयोगात्मक रवैये का पालन करने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान सीएमएचओ डॉ.हुरमाडे ने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अस्पताल व्यवस्थाओं में आवश्यक प्रबंधन के निर्देश दिये। उन्होंने 19 जून को आयोजित किये जाने वाले सिकलसेल शिविर की आवश्यक व्यवस्थाओं के संबंध में भी निर्देश दिये। सीएमएचओ डॉ हुरमाडे ने कहा कि जिला चिकित्सालय आने वाले हर मरीज के बेहतर उपचार के लिये सदैव तत्पर रहना ही हमारी प्राथमिकता है। निरीक्षण के दौरान सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. जगदीश घोरे , आरएमओ डॉक्टर रानू वर्मा, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश परिहार, जिला टीकाकरण अधिकारी राज्य डॉ. प्रांजल उपाध्याय सहित अन्य मौजूद रहे।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नौसर राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक में चयनित हुआ

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देशन में जिले के सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध सुविधाओं और गुणवत्ता में लगातार सुधार हो रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच.पी.सिंह ने बताया कि अब तक जिले के कुल 31 अस्पतालों को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत चयनित किया जा चुका है। उन्होने बताया कि हाल ही में जिले के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नौसर राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक के तहत चयनित किया गया है। इसके पूर्व एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र टिमरनी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रहटगांव एवं 28 उपस्वास्थ्य केन्द्र राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक के तहत चयनित हो चुके हैं।

स्वास्थ्य विभाग के शिविर में 15 यूनिट हुआ रक्तदान

बैतूल (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर शनिवार को पोद्दार स्कूल में एक विशेष रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य एवं समाज सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इस रक्तदान शिविर में विद्यालय के शिक्षकों, छात्रों एवं स्थानीय निवासियों ने कुल 15 यूनिट रक्तदान किया। रक्तदान के लिए आई जिला चिकित्सालय की टीम ने आवश्यक चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित की। कार्यक्रम के दौरान सीएमएचओ डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने रक्तदान के महत्व पर चर्चा की और इसके स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता फैलाई। रक्तदाताओं को सीएमएचओ डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े द्वारा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

कश्मीर की सांस्कृतिक आत्मा में जीवित है लल देद

लोक साहित्य

डॉ. परविंदर शर्मा

कश्मीर भारत का एक अमूल अंग है और आगे भी रहेगा। जिसके बिना भारत माता की पुकार पूरी नहीं होती। समय-समय पर कश्मीर की धरती ऊपर अनेक धर्मों ने अपने अपने निशान छोड़ें चाहे वह हिंदू, बौद्ध जा इस्लामदर्शन का प्रभावक्यों ना हो। उनके अनुयायियों ने अपनी-अपनी बातों से नैतिक कार्य को पूरा किया जो उसे समय के समाज को आवश्यकता थी। ऐसे ही 14वी शताब्दी एक संत रूपी कवित्री ने अपनी आंखें समाज के सामने खोली जब कश्मीर की घाटी पर बहुत अत्याचार हर तरफ से हो रहे थे। एक तरफ इस्लाम का बढ़ता हुआ प्रभाव उसको अपनी गोद में समा रहा था और दूसरी और वहां पर रह रहे लोगों में अत्याचार एवं क्रोध के कारण आम जनमानस बहुत पीड़ित था। उनको एक ऐसे सहारे की आवश्यकता थी जो इन लोगों को समुद्र से बाहर निकल सके। ऐसा ही एक कार्य लल देद कवित्री ने पूरा किया।लल देद, जिन्हें लल्लेश्वरी या लल्ला आरिफ़ा के नाम से भी जाना जाता है, 14वीं शताब्दी की एक महान कश्मीरी संत-कवयित्री थीं। उनका जन्म एक पंडित ब्राह्मण परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने सामाजिक और धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर एक ऐसी आध्यात्मिक और काव्यात्मक परंपरा की नींव रखी जो आज भी कश्मीर की सांस्कृतिक आत्मा में जीवित है। उन्होंने 'वाख' नामक कश्मीरी छंद शैली में काव्य रचना की, जो सहजता और गहन अध्यात्म से ओतप्रोत थी।लल देद का युग एक कठिन समय था कश्मीर में धार्मिक परिवर्तन, समाज में जातीय भेदभाव, और राजनीतिक अस्थिरता चरम पर थी। ऐसे में लल देद की वाणी और उनका जीवन एकीकृत कश्मीर की आशा बनकर उभरा। उन्होंने न केवल हिंदू और इस्लाम के बीच पुल का काम किया, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना को भी एक नई दिशा दी।

लल देद ने शैव दर्शन के आधार पर जीवन को देखा, लेकिन उनका दृष्टिकोण किसी भी एक धर्म तक सीमित नहीं था। उन्होंने कश्मीर में सूफी विचारधारा से भी गहरे संबंध बनाए। उनके जीवन और वाखों में हिन्दू और इस्लामी तत्वों का अद्भुत समन्वय देखा जा सकता है।वह शेख नूरुद्दीन नूरानी (नंद ऋषि) जैसे सूफी संतों की प्रेरणास्रोत मानी जाती हैं, जो आगे चलकर 'ऋषि-सूफी' परंपरा का केंद्र बने। इस परंपरा ने कश्मीर में हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव रखी, जिसे 'कश्मीरियत' की आत्मा कहा जाता है।लल देद ने स्त्री होकर भी उस काल की पुरुष प्रधान धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने मंदिर, मूर्ति-पूजा, और कर्मकांड से ऊपर उठकर आत्मज्ञान और सत्य की खोज को महत्व दिया। उनके वाख आत्मा की स्वतंत्रता, ध्यान और आत्म-साक्षात्कार की बात करते हैं, न कि किसी बाहरी दिखावे या सामाजिक धार्मिक उपदेश नहीं हैं, वे आत्मा की गहराइयों में उतरने का प्रयास हैं। उनका उद्देश्य था लोगों को अपने भीतर झाँकने और सच्चे आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाना। उन्होंने बाहरी धार्मिक चिन्हों को निरर्थक बताते हुए आत्मिक

पहचान की। उदाहरणस्वरूप, उनके एक वाख में कहा गया है-

'शिव छु थालि थालि रोज़ान,
मौनं भ्रूके सरी वाजे'

(शिव हर कण में विराजमान है, मौन ध्यान ही सबसे बड़ी पूजा है।)

यह भावधारा उस समय समाज में व्याप्त जातिगत ऊँच-नीच को खारिज करती है और मानवीय समानता पर बल देती है। लल देद की कविताएँ केवल अनुभव को प्रधानता दी।ऐसा दृष्टिकोण किसी विशेष सम्प्रदाय की सीमा को तोड़ता है और सभी को एक ही सत्य की ओर अग्रसर करता है। यही उनका सबसे बड़ा योगदान था- कश्मीर की आत्मा को विभाजित करने वाली दीवारों को तोड़ना।

लल देद ने संस्कृत या फारसी की जगह कश्मीरी भाषा में लिखा, जो आम जनता की भाषा थी। उनके वाख इतने सरल, प्रभावशाली और आत्मीय थे कि वे लोकगीतों की तरह जन-जन की जुबान पर चढ़ गए। भाषा का यह चयन भी एक एकीकृत कश्मीर की दिशा में बड़ा कदम था। वह सभी वर्गों, धर्मों और जातियों के लोगों तक पहुँचीं और एक साझा सांस्कृतिक पहचान को आकार दिया।आज जब कश्मीर घाटी अनेक तरह की अस्थिरता और तनाव का सामना कर रही है, तब लल देद की शिक्षाएँ पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। उनके वाख हमें याद दिलाते हैं कि कश्मीर केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक साझा सांस्कृतिक भावना का नाम है।उनकी कविताएँ आज भी स्कूलों, लोक गायन, और साहित्यिक आयोजनों में पढ़ी और गाई जाती हैं। वे कश्मीर की 'सांस्कृतिक माँ' मानी जाती हैं, जिनकी छवि मंदिरों और मस्जिदों - दोनों जगह मिलती है।

लल देद न केवल एक महान कवियित्री थीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांतिकारी और आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थीं। उन्होंने अपने जीवन और वाखों के माध्यम से कश्मीर को एकता, सहिष्णुता और आध्यात्मिकता की राह दिखाई। उनकी विरासत एक ऐसे कश्मीर की प्रतीक है जहाँ धर्म, जाति और लिंग के बंधनों से ऊपर उठकर मनुष्यता को महत्व दिया गया। आज भी लल देद की वाणी कश्मीर के हर कोने में गूँजती है और एकता का संदेश देती हैएक ऐसा संदेश जो समय की सीमाओं से परे है।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस पर कार्यक्रमो का आयोजन

विदिशा (निप्र)। प्रत्येक वर्ष 15 जून को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस का आयोजन किया जाता है। सामाजिक न्याय विभाग के माध्यम से इस वर्ष उक्त कार्यक्रम पुरानी जिला चिकित्सालय परिसर में संचालित श्री हरिवृद्धाश्रम में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में वृद्धजनों के स्वास्थ्य परीक्षण की प्रक्रिया स्वास्थ्य विभाग के द्वारा शिविर आयोजित कर क्रियान्वित की गई थी वहीं आईटीआई के विद्यार्थियों ने वृद्धजनों से मुलाकात कर उनके अनुभवो को जाना है।

गौरतलब हो कि प्रत्येक वर्ष वृद्धजनों के साथ होने वाले सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और शारीरिक दुर्व्यवहार को रोकने के लिए युवाओं को जागरूक करने तथा वृद्धजनों की सम्पत्ति व सुरक्षा के लिए प्रचलित कानून माता पिता और वरिष्ठ नागरिको के कल्याण अधिनियम की विभिन्न पहलुओं की जानकारियां दी गई। विदिशा नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति शर्मा ने आयोजन का शुभांरभ करते हुए वृद्धजनों को अनुभव की खदान बताया और हम सब भी आगे चलकर वृद्ध होंगे अतः हमारे साथ कोई दुर्व्यवहार ना करें ऐसा ही हम वृद्धजनो के प्रति अपने विचार, कार्यो से परलिक्षित हो। कार्यक्रम को प्रजापति ब्रहमकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सपना दीदी ने भी सम्बोधित किया।

विदिशा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा ने इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत किया और वृद्धजनों से दुर्व्यवहार करने पर कानूनन प्रावधानो को रेखांकित किया है। इस अवसर पर जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ डीके शर्मा ने वृद्धजनों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया और उन्हें रोगोपचार दवाईयां भी दी है।

इस दौरान वृद्धजनों के आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय विभाग के उप संचालक श्री पंकज जैन तथा राधाकृष्ण आईटीआई के विद्यार्थियों ने वृद्धजनों का फूल माला पहनाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में आगंतुको के प्रति वृद्धाश्रम की सुश्री केसर जहां ने आभार व्यक्त किया।

बुजुर्गजन दुर्व्यवहार सहन न करें, बल्कि अपने अधिकारों का इस्तेमाल करें

हरदा (निप्र)। रविवार को विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस के अवसर पर आमजनों में बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने तथा वृद्धों की सुरक्षा एवं उनके अधिकारों के संबंध में जागरूकता प्रसारित करने के उद्देश्य से हरदा के वृद्धाश्रम में सिविल सोसायटी, रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन तथा अन्य स्टेट होल्डर्स के साथ विधिक साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर में श्री चन्द्रशेखर राठौर सचिव द्वारा वृद्धजनों को नालसा योजना के तहत वृध्दजनों से संबंधित कानूनों एवं उनके संवैधानिक अधिकारों आदि के बारे में जानकारी दी गई। इस शिविर में न्यायाधीश श्री चंद्रशेखर राठौर द्वारा उपस्थितजनों को बताया गया कि हर वर्ष 15 जून को मनाया जाने वाला विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस का उद्देश्य बुजुर्गो के साथ होने वाले दुर्व्यवहार, भेद-भाव और उपेक्षा के बारे में जागरूकता प्रसारित करना है। बुजुर्गो के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं के प्रति जागरूकता जरूरी है। उन्होंने बताया कि केन्द्र सरकार के टोल फ्री हेल्पलाईन नंबर 14567 पर फोन करके वरिष्ठजन कानूनी मामलों की जानकारी ले सकते है। साथ ही बेसहारा बुजुर्गो के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं को रोकने के लिए व बचाव के लिए भी मदद मिलती है। इस नंबर पर सुबह 8 से रात के 8 बजे तक संपर्क कर सकते है। इसके अलावा नेशनल इमरजेंसी नंबर 112 पर पुलिस को कॉल कर सकते है।

एक गांव की गृहणी महिला के सपने हुए साकार

विदिशा (निप्र)। ग्रहणी महिला के रूप में जीवन यापन करने वाली भारती पटेल मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद से प्रेरित होकर आज स्वयं का विद्यालय संचालित करते हुए अन्य महिलाओं को भी रोजगार दे रही हैं। भारती पटेल ने महिला सशक्तिकरण की एक बेहतरीन मिसाल पेश की है, जिसकी उनके गांव सहित जिले भर में सराहना हो रही है। हम बात कर रहे हैं विदिशा जिले के विकासखंड गंजबासौदा से सटा हुआ ग्राम मर्दा खेड़ी जो कि विकासखंड मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूरी पर स्थित है जिसकी जनसंख्या लगभग 400 से 500 है।

अधिकतर परिवार मजदूर वर्ग से हैं जिसमें पुरुष एवं महिलाएं पास ही बैरेठ स्थित स्लीपर कोच फैक्ट्री में मजदूरी करने जाते हैं और लगभग सारे ग्रामीणों का जीवन यापन मजदूरी व कोच फैक्ट्री पर ही निर्भर है। जब मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद की ब्लॉक समन्वयक गंजबासौदा से श्रीमती ममता राठौर द्वारा वर्ष 2011-12 में ग्राम भ्रमण किया तब उन्होंने वहां महिला समिति बनाने का निर्णय लिया क्योंकि पुरुष वर्ग अधिकतर मजदूरी पर निर्भर थे। कुछ ग्रहणी महिलाओं के साथ उन्होंने समिति प्रारंभ की और नियमित बैठक और अन्य विभागीय कार्यक्रम वहां पर आयोजित किए गए। इस समिति की सचिव व ग्राम की महिला श्रीमती भारती पटेल अन्य महिलाओं से काफी अधिक जन अभियान परिषद से जुड़ती चली गईं और उनका इन सभी कार्यों में भी रुचि देखने मिली। भारती पटेल वैसे तो ग्रहणी ही थी लेकिन जब वह इस समिति से जुड़ी और उनको कुछ कर दिखाने का जज्बा उत्पन्न हुआ। भारती पटेल ने 12 वीं पास होने के कारण ग्राम के ही एक प्राइवेट स्कूल में मानदेय रूप में शिक्षिका का कार्य प्रारंभ किया। कुछ समय तक उन्होंने ग्राम के ही प्राइवेट स्कूल में शिक्षिका का कार्य किया। परंतु भारती पटेल वहां से भी संतुष्ट नहीं हुई और उन्होंने मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के बारे में सेक्टर प्रभारी अमित शर्मा से जानकारी ली और बच्चों का परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय विकासखंड गंजबासौदा से आगे की पढ़ाई करने का निर्णय लिया।

धरती आबा अभियान के तहत शिविरो का आयोजन शुरू हुआ

विदिशा (निप्र)। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत धरती आबा अभियान जागरूकता और लाभ संतृप्ति शिविरो का आयोजन विदिशा जिले में भी आज रविवार 15 जून से शुरू हुआ है। उक्त शिविर 30 जून तक जारी रहेंगे। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने धरती आबा के तहत आयोजित होने वाले शिविरो के उद्धेश्यो की प्राप्ति के लिए ग्रामवार नोडल अधिकारी नियुक्त किए है जिन ग्रामो में शिविर आयोजित होंगे उनमें राजस्व, जनपद, खाद्य विभाग, स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा, कृषि, लीड बैंक, भू-अभिलेख, सामाजिक न्याय, महिला एवं बाल विकास, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, ऊर्जा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास और नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग सहित कुल 13 विभागो के अधिकारी हरेक शिविर में मौजूद रहेंगे। धरती आबा योजना के तहत रविवार को चार विकासखण्डो के आठ ग्रामो में एक साथ शिविरो का आयोजन किया गया है जिसमें ग्यारसपुर के लखूली में, बासौदा के पिपरियाजादौन, कुरावद, सकौली, मसूदपुर, मेहमूदा तथा सिरोंज के छापू

और लटेरी के ताजपुरा में आयोजित किया गया था। योजनाओं की जानकारी धरती आबा योजना के तहत आयोजित विशेष शिविरो में जनजाति वर्ग के हितग्राहियों के सर्वागीण विकास हेतु संचालित योजनाओं की जानकारियां पूर्व उल्लेखित 13 विभागो के खण्ड व जिला स्तरीय अधिकारियों के द्वारा शिविर स्थलो पर दी गई है वहीं मौके पर अनेक हितग्राहियो से शासकीय योजनाओं व कार्यक्रमों से लाभांवित कराने हेतु आवेदन फार्म भरवाने की भी प्रक्रिया पूरी की गई है।

शिविरों से प्रसन्नचित मुद्रा में घरो की और रवाना हुए हितग्राही

विदिशा (निप्र)। धरती आबा जनजातीय उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत विदिशा जिले के 86 ग्रामो का चयन किया गया है इन ग्रामो में रहने वाले सभी जनजाति वर्ग के नागरिकों को सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएं पीएम जनमन की तर्ज पर उपलब्ध कराई जानी है। 13 विभागो के माध्यम से क्रियान्वित योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ चिन्हांकित सभी 86 ग्रामो में स्पष्ट परलिक्षित हो इसके लिए जिले में विशेष प्रबंध कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा सुनिश्चित कराए गए है। उन्होंने 15 जून से शुरू होने वाले शिविरो की क्रास मानिटरिंग की व्यवस्थाएं स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित कराई है। रविवार 15 जून से शुरू हुए धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान के विशेष शिविरो में हितग्राही सीधे लाभांवित हो रहे है। यह नजारा आज शिविर स्थलो पर सभी के द्वारा देखा गया है। लाभांवित होने वाले जनजाति वर्ग के हितग्राही हितलाभ के उपरांत प्रसन्नचित मुद्रा में अपने-अपने घरो की और रवाना हुए है। बासौदा तहसील के मसूदपुर में आयोजित शिविर को तहसीलदार श्रीमती सविता पटेल और जनपद सीईओ तपस्या जैन ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने ग्रामवासियों से कहा कि वे शासन की हरेक योजना का लाभ लेने में किसी भी प्रकार का संकोच ना करें। यह आप सबका हक है कि आपको घर बैठे योजना का लाभ दिलाया जाए। इसी कडी के तहत यह शिविर आयोजित किया गया है। शिविर स्थल पर तहसीलदार श्रीमती सविता पटेल ने आवेदिका श्रीमती पोसाबाई को अपने पति परसराम की मृत्यु उपरांत मृत्यु प्रमाण पत्र मौके पर प्रदाय किया। प्रमाण पत्र के लिए आवेदिका को प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी है। बासौदा एसडीएम श्री विजय राय ने बताया कि ग्राम मेहमूदा में आयोजित शिविर में मौके पर आयुष्मान कार्ड बनाने का कार्य किया गया है। यहां पांच हितग्राहियों को आयुष्मान कार्ड जारी किए गए है। ग्राम सकोली में आयोजित शिविर में तहसीलदार श्रीमती सविता पटेल के द्वारा राजस्व अभिलेखो के कार्यो को दुरूस्त कराया गया है। ग्राम पिपरियाजादौन में आयोजित शिविर में लीड़ बैंक आफीसर श्री भगवान सिंह बघेल ने आवेदको के बैंक से संबंधित समस्याओं का समाधान मौके पर किया है। इसी प्रकार अन्य ग्रामो के शिविरो में भी विभागीय अधिकारियों ने पहुंचकर अपने-अपने विभाग से संबंधित शासकीय योजनाओ व कार्यक्रमो की जाकनारियां सांझा की और योजनाओं से हितलाभ कैसे प्राप्त करें इसके लिए आवश्यक आवेदन पत्र भरवाने की प्रक्रिया भी मौके पर संपादित कराई गई है।

किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में सहारा बन रही पीएम फसल बीमा योजना

सीहोर (निप्र)। केंद्र एवं राज्य सरकार कृषि को उन्नत बनाने और किसानों के कल्याण के लिए अनेकों जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना भी उन्हीं योजनाओं में से एक है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों की फसलों को प्राकृतिक आपदाओं, कीट-रोगों और मौसम जनित जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करना है। यह योजना किसानों के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य कर रही है।

इस योजना के अंतर्गत अपनी फसलों का बीमा कराने के लिए किसानों को नाममात्र की प्रीमियम राशि का भुगतान करना होता है तथा शेष राशि केंद्र व राज्य सरकार वहन

करती हैं। यदि किसी कारणवश फसल को नुकसान होता है, तो बीमित राशि का भुगतान सीधे किसान के खाते में किया जाता है। सीहोर जिले के ग्राम सिद्दीकगंज निवासी किसान श्री सचिन वर्मा भी उन्हीं किसानों में से एक हैं, जिन्हें इस योजना का लाभ मिला है। किसान श्री सचिन वर्मा ने अपनी खेत में सोयाबीन की फसल लगाई थी, परंतु विगत वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण उनकी पूरी फसल नष्ट हो गई। ऐसी स्थिति में खाद, बीज और श्रम पर किया गया निवेश भी डूबता हुआ नजर आ रहा था, जिससे आर्थिक संकट और कर्ज का बोझ बढ़ने की आशंका थी। लेकिन सौभाग्यवश किसान श्री सचिन वर्मा ने पहले ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत अपनी फसल का बीमा करा लिया था। जब नुकसान का आंकलन हुआ, तो बीमा कंपनी द्वारा सत्यापन के उपरांत उन्हें मुआवजा राशि प्रदान की गई। इस राहत से न केवल उनकी आर्थिक स्थिति संभली, बल्कि वे कर्ज में डूबने से भी बच पाए।

राइट क्लिक

क्या ईरान के बाद पाकिस्तान भी लपेटे में आएगा?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

ईरान को परमाणु ताकत बनने से रोकने के लिए जारी ईरान व इजराइल के बीच जारी भीषण जंग के बीच यह दूर की कौड़ी लग सकती है, लेकिन असंभव नहीं है। हालात जिस दिशा में मोड़ ले रहे हैं, उससे लगता है कि आने वाले समय में पाकिस्तान भी इजराइल के निशाने पर आ सकता है। इसका कारण है पाकिस्तान परमाणु अस्त्र सम्पन्न देश होना, पाक सरकार द्वारा परमाणु अप्रसार संधि पर दस्तखत न करना, परमाणु अस्त्रों के प्रथम प्रयोग न करने का ऐलान न करना तथा पाकिस्तान द्वारा इस्लामिक कट्टरपंथियों को खुलेआम समर्थन देना, जो सारी दुनिया के लिए खतरा बने हुए हैं।

पाकिस्तान, भारत सहित दुनिया के उन नौ देशों में शुमार है, जिनके पास परमाणु ताकत है और परमाणु अस्त्र भी हैं। पाकिस्तान ने जब भारत की प्रतिस्पर्द्धा में परमाणु विस्फोट कर खुद को एटमी ताकत घोषित किया तब सबसे ज्यादा खुशी ईरान जैसे उन इस्लामिक देशों को हुई, जो खुद भी एटम बम बनाने की कोशिश में लंबे समय से लगे हुए थे इस प्रौद्योगिकी में यूरोपीय देशों का एकाधिकार तोड़ना चाहते थे। इजराइल हमेशा से इसे अपने अस्तित्व पर खतरा मानता आया है और उसके ईरान की ऐसी कोशिशों को ध्वस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उधर पाक का एटम बम बनाने वाले परमाणु वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कादिर खान थे, जो कभी भोपाल से ही पाकिस्तान गए थे। उन्हें पश्चिमी देशों ने 'परमाणु जिहादी' कहा। हालांकि बाद में कादिर की भी पाक में बेकदरी हुई, वो अलग बात है। पाकिस्तान द्वारा नीदरलैंड से चुराई तकनीक के जरिए जो परमाणु विस्फोट किया गया, उसे अमेरिका व पश्चिमी देशों ने 'इस्लामिक बम' का नाम दिया, क्योंकि यह दुनिया के ज्यादातर मुस्लिम देशों की परमाणु शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा को अभिव्यक्त प्रतिनिधित्व करता था। परमाणु बम की ताकत ने ही पाकिस्तान में मुस्लिम देशों का चौधरी बनने की हसरत जगाई। इस बीच ईरान भी परमाणु शक्ति बनने की पूरी कोशिश कर रहा था, जो अमेरिका, इजराइल और अन्य पश्चिमी देशों को कतई मंजूर नहीं था। इसके पीछे डर इस बात का है कि ईरान ने कट्टरपंथी इस्लाम को निर्यात करने तथा उसे पोसने के लिए तीन बड़े कट्टरपंथी संगठन खड़े किए और उन्हें शक्ति सम्पन्न बनाया। ये कई देशों की सत्ता के लिए खतरा बन गए। यह आशंका गहराने लगी कि कहीं ईरान परमाणु ताकत बन गया तो एटम बम जैसा महाविनाशक हथियार आतंकियों के हाथ लग सकता है। अगर ऐसा हुआ तो उसका गैर जिम्मेदाराना तरीके से क्षुद्र स्वार्थों के लिए दुरूपयोग हो सकता है। इस बात की पक्की गारंटी नहीं है कि पाक का परमाणु कार्यक्रम व हथियार पूरी भी तरह सुरक्षित हाथों में हैं। इसीलिए अमेरिका और इजराइल ईरान को भी तहस नहस कर दे रहे हैं कि वो परमाणु शक्ति के गलत उपयोग न करने की गारंटी नहीं दे रहा। हालांकि यह एकतरफा दादागिरी भी है।

वैसे ईरान और पाकिस्तान मुस्लिम देश होने के बाद भी दोनों में बहुत ज्यादा भाई चारा नहीं रहा, क्योंकि ईरान शिया मुसलमान बहुल देश है और पाकिस्तान सुन्नी बहुल। ईरान में सुन्नी और पाकिस्तान में शिया अल्पसंख्यक घोषित हैं और भेदभाव के शिकार हैं। लेकिन अब अचानक पाकिस्तान और ईरान के बीच भाईचारा बढ़ गया है तो इसका कारण शेर का अंदेशा है। पाक नेताओं ने कहा कि ईरान हमारा मुस्लिम भाई है। इस युद्ध में हम उसकी पूरी तरह मदद करेंगे। ताजा बवाल तब मचा जब सोशल मीडिया पर ईरानी सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी जनरल मोहसिन रेजाई का बयान वायरल हुआ, जिसमे उन्होंने कहा कि अगर इजरायल ने ईरान पर एटम बम डाला तो बदले में पाकिस्तान इजरायल पर परमाणु हमला कर देगा। इसके पहले इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक इंटरव्यू में सार्वजनिक रूप से कसम खाई थी कि वो ईरान और पाकिस्तान के परमाणु बमों को तबाह करके रहेंगे। उन्होंने कहा था कि हमारा सबसे बड़ा मिशन उग्रवादी इस्लामी शासन को परमाणु हथियार पाने से रोकना है। परमाणु हथियार इन आतंकी शासन के हाथों में नहीं जाना चाहिए। चाहे वो ईरान हो या फिर पाकिस्तान। इन कट्टरपंथियों के पास परमाणु हथियार होंगे तो डर है कि वो इनसे जुड़े नियमों का पालन नहीं करेंगे। जनरल रेजाई के बयान के बाद पाकिस्तान के हाथ पैर फूल गए और उसने अधिकृत तौर पर कहा कि पाकिस्तान का एटम बम स्वदेश की रक्षा के लिए है, किसी और पर डालने के लिए नहीं है। हमने कभी भी इजराइल पर एटम बम डालने की धमकी नहीं दी। पाकिस्तान के इस यू टर्न को ईरान की 'हर तरह से मदद' के वादे के खिलाफ माना जा रहा है। यही नहीं उसने ईरान के साथ अपनी सीमा भी बंद कर दी है। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि जनरल रेजाई का यह बयान कब का है।

वैसे पाकिस्तान फिलीस्तीनियों को अपने नैतिक समर्थन के चलते इजराइल से दूरी बनाता आया है। उसके इजराइल के साथ कूटनीतिक रिश्ते भी नहीं हैं। फिलिस्तीनियों को भी पाकिस्तान का समर्थन मुख्य रूप से इसलिए है,क्योंकि वो मुसलमान हैं। अब पाकिस्तान को डर यह है कि अगर ईरान एपीसोड खत्म हो गया तो आगे क्या होगा? ईरान भी कब तक मुकाबला करेगा। संभव है कि ईरान या तो दबाव में अमेरिका के साथ परमाणु डील पर दस्तखत कर दे या फिर अमेरिका और इजराइल मिलकर ईरान में कट्टरपंथी खोमेनेई सरकार का तख्तां पलट दें। यद्यपि यह बहुत आसान नहीं है। यह इस बात पर निर्भर है कि ईरानी जनता क्या चाहती है? संभव है कि तख्ता पलट के इस काम में अमेरिका पाकिस्तान की मदद भी मांगे, जिससे मुकरना पाक के लिए बहुत कठिन है। अगर ईरान में अमेरिका समर्थक सरकार कायम हो गई तो अगला लक्ष्य पाकिस्तान ही होगा, जिसके पास परमाणु बम हैं और वो जब-तब भारत को इसकी धमकी देता रहता है। पाक के पास 170 परमाणु बम हैं, जबकि ईरान तो इसे बनाने की कोशिश में ही मारा गया। हालांकि भारत ने भी ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देकर पाक को उसकी औकात बता दी है। लेकिन खतरा अभी भी बदस्तूर है कि पाक का परमाणु कभी भी उन आतंकियों के हाथ में जा सकता है, जिन्हें ईरान की तरह उसने भी पाल रखा है। यह बात न तो इजराइल से और न ही अमेरिका से छिपी है। भारत तो दुनिया को यह बात शुरू से बताता रहा है।

लिहाजा इस बात की पूरी संभावना है कि ईरान प्रकरण निपटते ही अगला टारगेट पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम हो। इसके लिए भूमिका बननी शुरू हो जाएगी। पाक के परमाणु कार्यक्रम को लेकर शंकाओंके कुछ ठोस कारण हैं। पहला तो पाकिस्तान में कमजोर नागरिक सरकार है, जो फौज के दबाव में काम करती है और खुद फौज आंतकियों को खुले आम प्रश्रय दे रही है। दूसरे, पाक ने 1968 की परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। इस संधि पर दनिया के 191 देशों के दस्तखत हैं। भारत सहित 9 देशों ने इससे दूरी इस आधार पर बनाई है कि यह संधि भेदभावपूर्ण और न्यायसंगत नहीं है। लेकिन भारत ने परमाणु हथियारों के मामले में 'नो फर्स्ट यूज' घोषणा की हुई है, जिसका अर्थ यह है कि भारत कभी भी युद्ध की स्थिति में पहले परमाणु बम का उपयोग नहीं करेगा। लेकिन परमाणु हमला हुआ तो उसी शैली में जवाब देगा। ऐसी ही घोषणा चीन ने भी की हुई है। लेकिन पाकिस्तान ने नहीं की है। यह रवैया उसके गैर जिम्मेदार परमाणु शक्ति होने की ओर इंगित करता है और इजराइल इसे मुद्दा बना सकता है।

प्रदेश सरकार समाज के प्रति संवेदनशील : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

शराब दुकानें हटाये जाने पर एकतापुरी के रहवासियों ने उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा का जताया आभार

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा के निर्देश पर आबकारी विभाग ने अशोका गार्डन स्थित एकतापुरी कॉलोनी के वार्ड 38 में स्थापित की गई शराब की दुकान को हटाए जाने के बाद एकतापुरी कॉलोनी रहवासी संघ ने मंगलवार को उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा का आभार व्यक्त किया। एकता पुरी कॉलोनी रहवासी संघ के रहवासी क्षेत्र की शराब दुकान को हटाने जाने पर उप मुख्यमंत्री श्री

देवड़ा का पुष्प-गुच्छ भेंट कर आभार जताया। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि प्रदेश सरकार सामाजिक संवेदनशीलता और जनभावनाओं के प्रति प्रतिबद्ध है। यह निर्णय न केवल बच्चों और युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करेगा बल्कि समाज में नैतिकता, शांति और स्वास्थ्य के वातावरण को भी प्रोत्साहित करेगा।

एकतापुरी कॉलोनी रहवासी संघ के अध्यक्ष श्री सीयाराम सिंह ने बताया कि कॉलोनी के रहवासी विगत दिनों से महिलाओं और रहवासियों ने शराब की दुकान हटाने की मांग की थी। इस संबंध में उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा के निर्देश पर आबकारी विभाग ने तुरंत कार्यवाही करते हुए शराब दुकान को अन्य स्थान पर शिफ्ट कर दिया है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा को आभार प्रकट करने रहवासियों में श्री धनेन्द्र धुहारे, श्रीमती संगीता लोधी, नीतू सिंह, प्रेमशीला समेत बड़ी संख्या में रहवासीगण शामिल हुए।

सामाजिक विकास के लिए मिलकर करें काम : मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग ने चार एनजीओ के साथ किये एमओयू, प्रदेश के समावेशी और सतत् विकास को मिलेगा बल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में मंगलवार को मंत्रालय में मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग और चार प्रतिष्ठित गैर शासकीय संगठनों अंतरा फाउंडेशन, प्रदान, पीएचआईए फाउंडेशन और यूएनविमेन के मध्य समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर एवं आदान-प्रदान किया गया। इन एमओयू से प्रदेश के सुनियोजित, समावेशी, सकल और सतत् विकास को बल मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश का सामाजिक परिदृश्य बदल रहा है। सरकार की योजनाओं का लाभ लेकर सभी अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। सामाजिक विकास के सभी मानकों में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी और सबको विकास का लाभ देने के लिए सरकार गैर शासकीय संगठनों के अनुभवों का भी लाभ उठायेगी। उन्होंने कहा कि म.प्र. राज्य नीति आयोग प्रदेश में संचालित सभी जनहितैषी योजनाओं के लोकव्यापीकरण के जरिए मानवीय और सामाजिक विकास के सभी मानकों में सुधार और बढ़ोतरी के लिए ऐसे एनजीओ के साथ मिलकर काम करे, जिन्हें विषयगत विशेषज्ञता हासिल हो। उन्होंने कहा कि फील्ड में रह कर काम करने वाले एनजीओ से मिले सुझावों पर भी गंभीरता से अमल का प्रयास

किया जाये। नीति आयोग, जनप्रतिनिधि और जिला प्रशासन आपसी समन्वय और सामंजस्य से जनता के हित में काम करें।

उल्लेखनीय है कि म.प्र. राज्य नीति आयोग राज्य के सतत् विकास लक्ष्यों के अनुश्रवण और मध्यप्रदेश के दृष्टि पत्र-2047 की तैयारी में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इन साझेदारियों के माध्यम से राज्य में नीति नवाचार, डाटा आधारित सुशासन तथा बहु-क्षेत्रीय विकास को और अधिक सशक्तता एवं व्यापकता के साथ अमल में लाया जायेगा।

नीति आयोग द्वारा जिन चार गैर शासकीय संगठनों के साथ एमओयू किया गया, उनमें अंतरा फाउंडेशन मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और पोषण सुधार पर कार्य में सरकार की मदद करेगा। प्रदान संगठन ग्रामीण विकास एवं महिला सशक्तिकरण को मजबूत करने में सहयोग करेगा। पीएचआईए फाउंडेशन जलवायु-लचीले विकास और समावेशी एवं सतत् विकास योजनाओं को आगे बढ़ाने में सरकार का नॉलेज पार्टनर के रूप में सहभागी बनेगा। इसी प्रकार यूएनविमेन प्रदेश में जेंडर उत्तरदायी शासन को आगे बढ़ाने में सरकार की मदद करेगा।

मंगलवार को हुए समझौता ज्ञापन के तहत इन आपसी साझेदारियों से गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका विकास, स्वास्थ्य और कल्याण, लैंगिक समानता, सभी को स्वच्छ जल, असमानता कम करने, जल सुरक्षा सहित वॉटरशेड संरचनाओं पर काम और जलवायु विकास आधारित कार्रवाई जैसे वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति में तेजी आएगी। ये समझौते समृद्ध मध्यप्रदेश के संकल्प और विजन 2047 के क्रियान्वयन की दिशा में एक ठोस कदम हैं, जो शासन, नीति और नागरिक सेवाओं के सहज और सरल वितरण में नवाचार एवं सहभागिता को बढ़ावा देंगे।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, अपर मुख्य सचिव योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी श्री संजय कुमार शुक्ला, म.प्र. राज्य नीति आयोग के सीईओ श्री ऋषि गर्ग सहित गैर शासकीय संगठन अंतरा फाउंडेशन से सुश्री चंद्रिका, प्रदान से सुश्री अर्चना सिंह, पीएचआईए फाउंडेशन से श्री अनिरुद्ध और यूएनविमेन से सुश्री जॉयट्री सहित अधिकारी मौजूद रहे।

भोपाल में देर रात 699 पुलिसकर्मियों के तबादले

एक ही थाने और संभाग में 5 साल से जमे पुलिस कर्मियों को किया इधर से उधर

भोपाल (नप्र)। भोपाल पुलिस कमिश्नरेट के अधीन आने वाले 37 थाने में 5 साल से अधिक समय से जमे 699 पुलिस कर्मियों की तबादला सूची देर रात जारी की गई। इसमें ऐसे पुलिसकर्मी जो एक ही संभाग में अथवा एक ही थाने में 5 साल और इससे अधिक समय से थे, उन्हें इधर से उधर किया गया है। यह सूची पीएचक्यू के आदेश के बाद जारी की गई है।

ट्रांसफर हुए पुलिसकर्मियों में शहर के 30 उप निरीक्षक, 56 सहायक उप निरीक्षक, 313 प्रधान आरक्षक और 301 आरक्षक शामिल हैं। पुलिस विभाग में हुए इस ट्रांसफर को लेकर कहा जा रहा है कि एक ही थाने में लंबे से जमे होने की वजह से कई शिकायतें सामने आ रही थी जिसके चलते इस पर संज्ञान लिया गया।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल से ट्रिवीट्रॉन हेल्थकेयर के प्रतिनिधि मंडल ने की सौजन्य भेंट

नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य की दिशा में नई पहल की संभावनाओं पर हुआ विमर्श

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए सरकार हर संभव नवाचार और तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहन दे रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वस्थ भारत के विजन को मूर्त रूप देने के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सभी स्तरों पर ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल मंत्रालय में ट्रिवीट्रॉन हेल्थकेयर के प्रतिनिधि मंडल से शिशुओं की स्वास्थ्य सेवाओं पर चर्चा कर रहे थे।

प्रतिनिधि मंडल ने प्रदेश में नवजात शिशुओं में कंजेनिटल मेटाबॉलिक डिसऑर्डर की पहचान और समय पर उपचार सुनिश्चित करने के लिए न्यू बॉर्न स्क्रीनिंग लैब की स्थापना का प्रस्ताव प्रस्तुत

किया। इस प्रयोगशाला की स्थापना से जन्म के कुछ दिनों के भीतर ही शिशुओं में गंभीर आनुवांशिक विकारों की पहचान की जा सकेगी, जिससे समय रहते उपचार संभव हो सकेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए ऐसे नवाचार अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि सरकार वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जनहितैषी तकनीकों को प्राथमिकता देती है। इस प्रस्ताव पर स्वास्थ्य विभाग द्वारा आवश्यक परीक्षण उपरांत सकारात्मक विचार किया जाएगा।

गौरक्षा के नाम पर युवकों की पिटाई

1 की मौत, दूसरे युवक की हालत गंभीर

भोपाल (नप्र)। रायसेन जिले में कथित गौ-परिवहन के शक में दो युवकों के साथ बेरहमी से मारपीट किए जाने का मामला सामने आया है। परिजनों ने इस हमले के लिए बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को जिम्मेदार ठहराया है।

आरोप है कि गायों से भरी गाड़ी को मेगांव के पास रोककर 20-25 लोगों ने दोनों युवकों की जमकर पिटाई की। इस हमले में भोपाल के जिंसी इलाके में रहने वाले जुनैद की मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक अरहम गंभीर हालत में चिरायु अस्पताल में भर्ती है। बता दें कि जुनैद मूलतः सिरोंज का रहने वाला था, वहीं अरहम श्यामपुर का निवासी है।

धनोरा से सिरोंज जा रहे थे गाय लेकर- परिजनों के मुताबिक, जुनैद और अरहम धनोरा से सिरोंज के लिए 6 गाय खरीदकर ला रहे थे। जुनैद भोपाल के जिंसी इलाके में डेरी का संचालन करता था और विदिशा में दूध के व्यवसाय से जुड़ा था। यह घटना 4 और 5 जून की दरम्यानी रात को हुई। मोहम्मद माज कुरैशी ने बताया कि बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने उन्हें मेगांव में रोका, फिर सांची और रायसेन के बीच उन्हें रातभर पीटा गया।

अरहम की हालत अभी भी गंभीर- अरहम के पिता जफर उद्दीन और जुनैद के भाई जैद कुरैशी ने बताया कि हमलावरों ने न सिर्फ मारपीट की, बल्कि करीब दो लाख रुपए भी लूट लिए। परिजनों को दोनों युवक 24 घंटे बाद विदिशा अस्पताल में मिले। इसके बाद हमीदिया अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां जुनैद की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि अरहम अभी वेंटिलेटर पर है और उसकी हालत बेहद गंभीर है।

बजरंग दल कार्यकर्ताओं पर आरोप- परिजन मोहम्मद अशरफ ने बताया कि जुनैद पिछले दो साल से भोपाल में रह रहा था और डेरी के लिए नियमित रूप से गाय खरीदता था। उन्होंने आरोप लगाया कि बजरंग दल के कार्यकर्ता चंदन यादव और चंदन कुशवाह इन युवकों को विदिशा थाने ले गए और वहां से सांची थाना क्षेत्र के मेगांव के पास ले जाकर पिटाई की।

जुनैद के परिजन मोहम्मद माज कुरैशी ने बताया कि वे विदिशा में डेरी के लिए पांच गाय खरीदने गए थे, तभी यह घटना हुई।

तीन आरोपी गिरफ्तार, वीडियो के आधार पर अन्य की तलाश- इस मामले में एसडीओपी रायसेन प्रतिभा शर्मा ने बताया कि घटना 5 जून की देर रात की है। मारपीट की एफआईआर 10 से 15 अज्ञात लोगों के खिलाफ दर्ज की गई है। अब तक तीन लोगों की गिरफ्तारी हुई है, जिनमें ध्रुव चतुर्वेदी और गगन दुबे (दोनों विदिशा निवासी) और रामपाल राजपूत (करारिया) शामिल हैं।

इनके किसी संगठन से जुड़े होने की अभी पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन परिजनों के आरोपों की जांच की जा रही है। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ पूर्व में भी पशु क्रूरता, अवैध परिवहन और मारपीट जैसे अपराध दर्ज हैं।

प्रदेश में 8000 निजी स्कूल बंद होने का खतरा

आरटीई नीतियों पर उठे गंभीर सवाल, स्कूल संचालक-बच्चों ने किया प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में निजी शिक्षा व्यवस्था पर संकट मंडरा रहा है। इसके लिए सीधे तौर पर राज्य शिक्षा केंद्र की नीतियां जिम्मेदार हैं। इन आरोपों के साथ, प्रदेश के लगभग 8 हजार निजी स्कूलों का अस्तित्व खतरे में है। इसी को लेकर स्कूल संचालक, शिक्षक, पेरेंट्स और छात्र एकजुट होकर भोपाल आए और राज्य शिक्षा केंद्र के सामने प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारियों का अपनी मांगों को लेकर सोमवार रात से ही राजधानी आना शुरू हो गया था। सुबह तक बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी जुटे और राज्य शिक्षा

केंद्र के सामने नारेबाजी की। उन्होंने इसे 'कोई आंदोलन नहीं, शिक्षा के अधिकार की पुकार' बताया है। प्रदर्शन के बाद स्कूल संचालक, शिक्षक, पेरेंट्स और छात्र राज्य शिक्षा केंद्र के अधिकारियों से मिलने पहुंचे।

450 स्कूल राजधानी में जिनकी मान्यता समाप्त- संचालक मंच के कोषाध्यक्ष मोनू तोमर ने बताया कि जिन स्कूलों की मान्या नहीं हो पाई, उनके लिए भोपाल आए हैं। इन स्कूलों को बंद कराने के लिए लगातार सरकार दबाव बना रही है। सरकार चाहती है कि सीएम राइज स्कूलों में ज्यादा बच्चे पहुंचे। साल 2024 दिसंबर माह में आदेश जारी हुए थे कि सभी स्कूल नवीन मान्यता के लिए अपलाई करें। इसमें कुछ नियम नए जोड़ गए थे। जिनसे एक छोटे स्कूल संचालक के लिए मान्यता लेना लगभग असंभव हो गया था। इसको लेकर शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह से मिले। मंत्री ने उस दौरान कहा था कि नियमों में बदलाव कर रहे हैं, अभी कोई भी आवेदन ना करे। जिस कारण से उनकी बातों में आकर यह निजी स्कूल आवेद नहीं कर सके।

प्रदर्शनकारियों ने लगाए यह आरोप

प्रदेश के लगभग 25000 निजी स्कूलों में से राज्य शिक्षा केंद्र ने सिर्फ 16000 को ही मान्यता दी है। शेष 8000 स्कूलों को बंद करने का प्रयास किया जा रहा है। यह कदम न केवल स्कूल संचालकों के हितों के विरुद्ध है, बल्कि लाखों गरीब और मध्यम वर्गीय छात्रों के भविष्य को भी अंधेरे में धकेल रहा है। अनुमान है कि इन स्कूलों के बंद होने से 20000 से 25000 छात्र शिक्षा से वंचित हो जाएंगे।

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार के अंतर्गत सरकार ने एक लाख से अधिक सीटें कम कर दी हैं। जिससे वंचित वर्ग के बच्चों का मौलिक शिक्षा का अधिकार भी उनसे छीना जा रहा है।

आरटीई के अंतर्गत निजी स्कूलों को दी जाने वाली प्रतिपूर्ति राशि का भुगतान सरकार ने 3 साल से नहीं किया है। उनकी शिकायत है कि यह स्थिति न केवल स्कूलों की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर रही है, बल्कि शिक्षकों की नौकरियों और छात्रों की पढ़ाई को भी सीधे तौर पर संकट में डाल रही है।